महादेवसहस्रनामस्तोत्र

भाषाटीकासहित

टीकाकार,

रामधन सुकुल

पोस्ट बहरामघाट, ज़िला बाराबंकी

सम्पादक,

भगवतीप्रसाद पाण्डेय 'अनुज'

प्रकाशक,

नवलकिशोर-प्रेस-बुकडिपो, लखनऊ.

सन् १९३९ ई०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

समर्पण

हे विश्वरूप धारणकर्ता भगवन् !

आपकी सृष्टि का एक अत्यन्त साधारणजन बीजवाहन श्रीउमापतिजी महाराज की पवित्र कीर्ति के कथन का दुःसाहस कर रहा है ।

हे त्रिकालपति विष्णु !

यह श्रीमहाराज नीलकंठजी की कीर्ति का कथन योगियों से भी अगम्य है, मनुष्याणां तु का कथा ।

हे मुक्तपुरुषों की परमगति !

इस निर्बुद्धि क्षुद्रजन के आश्रयरूप एक आप ही हैं ।

हे लक्ष्मीकान्त !

इसे अपनी सृष्टि का एक साधारण जन जान अवलम्ब दीजिये ।

हे दीनजनों के उद्धारक भगवन् !

कृपा कर इसे अपनाइये ।

आपका किंकरानुकिंकर

रामधन

मुक़ाम गनेशपुर, पोस्ट बहरामघाट,
ज़िला बाराबंकी (यू. पी.)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भूमिका

मैं बहुत समय से श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्र के समान श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र की चिन्ता में था, परन्तु उसका कहीं मुझे पता न चला। बहुत समय हुआ, जबकि मेरे यहाँ अर्थात् बहरामघाट के वासी तनसुखराय सूर्यमल-नामक फ़र्म के स्वामी परम शैव लाला तनसुखरायजी ने मुझसे कहा था कि श्रीतंडीऋषिकृत महादेवसहस्रनामस्तोत्र की प्रशंसा श्रीकाशीजी में मैंने सुनी है, परन्तु वह मुझे उपलब्ध नहीं हुआ, तबसे मैं इस विचार में और भी मग्न हुआ कि इसे खोजना चाहिये। फिर कुछ समय बाद मेरे ज्येष्ठ भ्राता पं० सीतारामजी शास्त्री ने कहा कि महाभारत के अनुशासनपर्व में अत्यन्त दिव्य महादेवसहस्रनामस्तोत्र है, परन्तु यह वार्ता तबसे यों ही पड़ी रही।

श्रीभगवान् की असीम कृपा तथा बुद्धि की प्रेरणा से जब श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्र के भाषाभाव लिखने का विचार हुआ, तब यह विचार पड़ा कि पाठान्तर मिटाने के निमित्त इस स्तोत्र को महाभारत से मिला लेना चाहिये। सो अनुशासनपर्व खोलते ही श्रीमहाराज महादेवजी का यह सहस्रनाम दृष्टिगोचर हुआ। परन्तु प्रथम विचार विष्णुसहस्रनाम का था, इस कारण उस स्तोत्र के लिखने के उपरान्त अब श्रीमहादेवसहस्रनाम स्तोत्र लिख रहा हूँ।

यह महादेवसहस्रनाम स्तोत्र महाभारत के अनुशासनपर्व अर्थात् १३वें पर्व का १७वाँ अध्याय है। इसमें श्रीमहाराज

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

महादेवजी के १००८ नाम हैं और तंडी ऋषिजी इसके कर्ता हैं। तंडी ऋषि-कृत क्यों कहा गया, इसका कारण ग्रंथ के आदि में दिया हुआ है। अनुष्टुप् इसका छन्द है और श्रीसदाशिवजी महाराज इसके देवता हैं। हरिहरात्मक (कृष्ण वर्ण में तीव्र तेज) इसका ध्यान है। भवपाशविमोचनार्थ इसका जप है। इसमें १८२ श्लोक हैं, जिनमें आदि तथा अन्त में फलश्रुति के ५९ श्लोक हैं और १२३ श्लोक नाम के हैं।

यह महादेवसहस्रनाम स्तोत्र बिलकुल विष्णुसहस्रनाम की ही रीति का है। एक महादेवसहस्रनाम स्तोत्र पद्मपुराण का छपा है, परन्तु इसकी उसकी रीति तथा नामों में बड़ा अन्तर है।

इस दिव्य स्तोत्र की भाषाटीका मैं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार श्रीनीलकण्ठजी की टीका के आधार पर लिख रहा हूँ। आशा है कि महात्मा विद्वान् जन मेरी इस ढिठाई के निमित्त क्षमा प्रदान करेंगे और भूलों को सुधार लेंगे।

विद्वज्जनों का कृपापात्र,

रामधन सुकुल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टीकाकार रामधन सुकुल का वंश-वृक्ष

- श्रीबाबा दूधनाथजी
  - श्रीविश्रामजी
    - श्रीमणिरामजी
      - श्रीआनन्दीरामजी
        - श्रीगिरिजारामजी
          - श्रीशिवचरणजी
          - श्रीरामदयालुजी
          - श्रीइन्द्रदत्तजी
          - श्रीरामचरणजी
            - श्रीसीतारामजी
            - रामधन
              - हरिहरदत्त
                - रमाकान्त
                - लक्ष्मीकान्त
              - विष्णुदत्त

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीशिवाय नमः ।

महादेवसहस्त्रनामस्तोत्र

भाषाटीकासहित

श्रीवासुदेव उवाच

ततः स प्रयतो भूत्वा मम तात युधिष्ठिर ।
प्राञ्जलिः प्राह विप्रर्षिर्नामसंग्रहमादितः ॥ १ ॥

श्रीवासुदेवजी ने कहा, हे प्रिय युधिष्ठिर! विप्रवर श्रीउपमन्युजी ने सावधान होकर हाथ जोड़ श्रीशिवजी की नामावली को सविस्तर वर्णन किया ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीउपमन्युरुवाच

ब्रह्मप्रोक्तैर्ऋषिप्रोक्तैर्वेदवेदाङ्गसम्भवैः ।
सर्वलोकेषु विख्यातं स्तुत्यं स्तोष्यामि नामभिः ॥ २ ॥
महद्भिर्विहितैः सत्यैः सिद्धैः सर्वार्थसाधकैः ।
ऋषिणा ताण्डिना भक्त्या कृतैर्वेदकृतात्मना ॥ ३ ॥
यथोक्तैः साधुभिः ख्यातैर्मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।
प्रवरं प्रथमं स्वर्ग्यं सर्वभूतहितं शुभम् ॥ ४ ॥
श्रुतैः सर्वत्र जगति ब्रह्मलोकावतारितैः ।
सत्यैस्तत्परमं ब्रह्म ब्रह्मप्रोक्तं सनातनम् ॥ ५ ॥

श्रीउपमन्युजी बोले, हे श्रीकृष्ण ! ब्रह्माजी के तथा ऋषिगणों के कहे एवं वेद तथा वेद के अंगों से उत्पन्न हुए नामों से, सब लोकों में विख्यात, स्तुति करने योग्य, श्रीशिवजी की मैं स्तुति करूँगा ॥ २ ॥ महात्माओं से धारण किए गए, सत्य, सिद्ध, सब प्रयोजनों के साधक जिन नामों को ब्रह्मा के तुल्य श्रीतंडीऋषि ने भक्तिपूर्वक दत्तचित्त होकर कहा है ॥३॥ और प्रसिद्ध तत्त्वदर्शी श्रेष्ठ मुनियों ने जिन नामों की यथार्थ प्रशंसा की है, ऐसे परमश्रेष्ठ आदिसिद्ध स्वर्ग के मार्ग, सब प्राणियों के हितरूप, कल्याणमय, ॥ ४ ॥ श्रीब्रह्माजी के कहे तथा ब्रह्मलोक से लाये गए, वेद और सत्य तथा अनादि परब्रह्मस्वरूप वे नाम संसार में सर्वत्र सुने जाते हैं ॥ ५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वक्ष्ये यदुकुलश्रेष्ठ शृणुष्वावहितो मम ।
वरयैनं भवं देवं भक्तस्त्वं परमेश्वरम् ॥ ६ ॥

तेन ते श्रावयिष्यामि यत्तद्ब्रह्म सनातनम् ।
न शक्यं विस्तरात्कृत्स्नं वक्तुं सर्वस्य केनचित् ॥७॥

युक्तेनापि विभूतीनामपि वर्षशतैरपि ।
यस्यादिर्मध्यमन्तं च सुरैरपि न गम्यते ॥ ८ ॥

कस्तस्य शक्नुयाद्वक्तुं गुणान् कार्त्स्न्येन माधव ।
किंतु देवस्य महतः संक्षिप्तार्थपदाक्षरम् ॥ ९ ॥

हे यदुकुल में श्रेष्ठ कृष्ण! मैं कहता हूँ, सावधानचित्त होकर मुझसे सुनिये । आप भक्त हैं अतः श्रीभव (शिवजी) की प्रार्थना कीजिये ॥ ६ ॥ मैं आपको उस अनादि ब्रह्म के नाम सुनाता हूँ । उस परमेश्वर के सम्पूर्ण गुणों का विस्तारपूर्वक वर्णन करने में कोई भी समर्थ नहीं हो सकता ॥७॥ सैकड़ों वर्ष सावधान होकर भी उस परमेश्वर की विभूतियों का वर्णन नहीं किया जा सकता । जिसके आदि, मध्य तथा अन्त को देवता भी नहीं पहुँच सकते ॥८॥ हे माधव, उन शिवजी के गुणों को सविस्तर वर्णन करने में कौन समर्थ हो सकता है तो भी अर्थ, पद और वर्णों को संक्षिप्त करके उन महादेवजी के चरित को ॥ ९ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शक्तितश्चरितं वक्ष्ये प्रसादात्तस्य धीमतः ।
अप्राप्य तु ततोऽनुज्ञां न शक्यः स्तोतुमीश्वरः १०॥
यदा तेनाभ्यनुज्ञातः स्तुतो वै स तदा मया ।
अनादिनिधनस्याहं जगद्योनेर्महात्मनः ॥ ११ ॥
नाम्नां कंचित्समुद्देशं वक्ष्याम्यव्यक्तयोनिनः ।
वरदस्य वरेण्यस्य विश्वरूपस्य धीमतः ॥ १२ ॥
शृणु नाम्नां च यत्कृष्ण यदुक्तं पद्मयोनिना ।
दशनामसहस्राणि यान्याह प्रपितामहः ॥ १३ ॥
तानि निर्मथ्य मनसा दध्नो घृतमिवोद्धृतम् ।
गिरेः सारं यथा हेम पुष्पसारं यथा मधु ॥ १४ ॥

विद्वान् श्रीतण्डी ऋषिजी के प्रसाद से, अपनी शक्ति के अनुसार, वर्णन करता हूँ। उनकी आज्ञा प्राप्त किए विना परमेश्वर की स्तुति नहीं हो सकती ॥ १० ॥ आदि-अन्तरहित संसार को उत्पन्न करनेवाले उन महात्मा की जब आज्ञा हुई तभी मैंने उनकी स्तुति की ॥११॥ वर देनेवाले याचना के योग्य संसार के रूप बुद्धिमान् गुप्तरूप ब्रह्मा के इशारे से कुछ नाम मैं कहता हूँ ॥१२॥ हे कृष्ण ! सुनो, १०००० नाम जो ब्रह्माजी ने कहे हैं, उन ब्रह्माजी के कहे हुए नामों को ॥१३॥ मन में मंथन कर दही में घी के समान मैंने निकाला है। जैसे पर्वत का सार सुवर्ण, फूल का सार शहद ॥ १४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घृतात्सारं यथा मण्डस्तथैतत्सारमुद्धृतम् ।
सर्वपापापहमिदं चतुर्वेदसमन्वितम् ॥ १५ ॥
प्रयत्नेनाधिगन्तव्यं धार्यं च प्रयतात्मना ।
मांगल्यं पौष्टिकं चैव रक्षोघ्नं पावनं महत् ॥ १६ ॥
इदं भक्ताय दातव्यं श्रद्दधानास्तिकाय च ।
नाश्रद्दधानरूपाय नास्तिकायाजितात्मने ॥ १७ ॥
यश्चाभ्यसूयते देवं कारणात्मानमीश्वरम् ।
स कृष्ण नरकं याति सह पूर्वैः सहात्मजैः॥ १८ ॥
इदं ध्यानमिदं योगमिदं ध्येयमनुत्तमम् ।
इदं जप्यमिदं ज्ञानं रहस्यमिदमुत्तमम् ॥ १९ ॥

और जैसे घी का सार मण्ड उसी प्रकार यह सार निकाला है, जो चारों वेदों से संयुक्त सम्पूर्ण पापों को हरनेवाला है॥ १५॥ सावधान-चित्त होकर युक्तिपूर्वक इसको मनन तथा धारण करना चाहिए। जो मंगल का देनेवाला, पुष्टिकारक है, राक्षसों का नाशक तथा अत्यन्त पवित्र है॥ १६॥ यह स्तोत्र आस्तिक एवं श्रद्धालु भक्तजन को ही देना चाहिए और जो श्रद्धारहित नास्तिक इन्द्रियलोलुप हो उसे नहीं देना चाहिए॥ १७॥ हे कृष्ण! जो संसार के कारणरूप ईश्वर का निन्दक है वह अपने पुरखाओं तथा पुत्रोंसहित नरक को जाता है॥ १८॥ यही ध्यान है, यही योग है, यही उत्तम ध्यान करने योग्य है, यही जप करने योग्य है, यही ज्ञान है, यही उत्तम रहस्य है॥ १९॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यं ज्ञात्वा अंतकालेऽपि गच्छेत परमां गतिम् ।
पवित्रं मङ्गलं मेध्यं कल्याणमिदमुत्तमम् ॥ २० ॥
इदं ब्रह्मा पुरा कृत्वा सर्वलोकपितामहः ।
सर्वस्तवानां राजत्वे दिव्यानां समकल्पयत् ॥ २१ ॥
तदा प्रभृति चैवायमीश्वरस्य महात्मनः ।
स्तवराज इति ख्यातो जगत्यमरपूजितः ॥ २२ ॥
ब्रह्मलोकादयं स्वर्गे स्तवराजोऽवतारितः ।
यतस्तण्डिः पुरा प्राप तेन तण्डिकृतोऽभवत् ॥ २३ ॥
स्वर्गाच्चैवात्र भूर्लोकं तण्डिना ह्यवतारितः ।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥ २४ ॥

जिसे जानकर मनुष्य अन्तकाल में परमगति को जाता है। जो पवित्र और मंगलस्वरूप तथा मेधाशक्ति को बढ़ानेवाला है और जो उत्तम कल्याणरूप है॥२०॥ सम्पूर्ण लोकों के पितामह ब्रह्माजी ने प्रथम देवताओं के लिए सम्पूर्ण स्तोत्रों का राजा इसे बनाया ॥२१॥ तभी से देवताओं में पूजित परमात्मा ईश्वर की यह स्तुति स्तवराज के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुई॥२२॥ यह स्तवराज ब्रह्मलोक से स्वर्ग में लाया गया और सबसे पहले तंडी ऋषि ने इसको पाया, इसी से तंडी ऋषिकृत कहा गया॥२३॥ स्वर्गलोक से तंडी ऋषि ने इस स्तोत्र को पृथ्वी में उतारा। यह स्तवराज सम्पूर्ण मंगलों का मंगल है और सम्पूर्ण पापों का नाशक है ॥ २४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निगदिष्ये महाबाहो स्तवानामुत्तमं स्तवम् ।
ब्रह्मणामपि यद्ब्रह्म पराणामपि यत्परम् ॥ २५ ॥
तेजसामपि यत्तेजस्तपसामपि यत्तपः ।
शान्तानामपि यः शान्तो द्युतीनामपि या द्युतिः २६
दान्तानामपि यो दान्तो धीमतामपि या च धीः ।
देवानामपि यो देवो ऋषीणामपि यस्त्वृषिः ॥२७॥
यज्ञानामपि यो यज्ञः शिवानामपि यः शिवः ।
रुद्राणामपि यो रुद्रः प्रभा प्रभवतामपि ॥ २८ ॥
योगिनामपि यो योगी कारणानां च कारणम् ।
यतो लोकाः संभवन्ति न भवन्ति यतः पुनः॥२९॥

हे महाबाहो ! स्तोत्रों में उत्तम यह स्तोत्र मैं आपसे कहता हूँ । वेदों के भी जो वेद हैं, परे से भी जो परे हैं ॥ २५ ॥ तेज के भी जो तेज, तपश्चर्याओं में जो तपोरूप, शान्तों में जो शान्त, प्रभा के भी जो प्रभारूप ॥२६॥ जितेन्द्रियों में जितेन्द्रिय, बुद्धिमानों की भी बुद्धि, देवों के भी जो देव, ऋषियों के भी जो ऋषि॥२७॥ यज्ञों में भी जो यज्ञ, कल्याण के भी जो कल्याण, रुद्रों में रुद्र, प्रभावशालियों की प्रभा (कान्ति)॥२८॥ योगियों में भी जो योगी, कारण के भी कारण, जिससे समस्त संसार उत्पन्न होता और विनाश को प्राप्त होता है ॥ २९ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सर्वभूतात्मभूतस्य हरस्यामिततेजसः ।
अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नां शर्वस्य मे शृणु ॥
यच्छ्रुत्वा मनुजव्याघ्र सर्वान्कामानवाप्स्यसि॥३०॥

स्थिरः स्थाणुः[2] प्रभुः[3] भीमः[4] प्रवरो[5] वरदो[6] वरः[7] ।
सर्वात्मा[8] सर्वविख्यातः[9] सर्वः[10] सर्वकरो[11] भवः[12] ॥३१॥

जटी[13] चर्मी[14] शिखण्डी[15] च सर्वाङ्गः[16] सर्वभावनः[17]
हरश्च[18] हरिणाक्षश्च[19] सर्वभूतहरः[20] प्रभुः[21] ॥ ३२ ॥

सब प्राणियों की आत्मा, अमित तेजवाले संहारकर्ता ऐसे श्रीमहादेवजी के १००८ नामों को मुझसे सुनो । हे मनुजव्याघ्र ! जिनके श्रवणमात्र से आप सब मनोरथों को पावेंगे ॥ ३० ॥

१ नित्य २ सबके आश्रय ३ परम सत्यरूप ४ भयानक ५ श्रेष्ठ ६ वरदाता ७ आच्छादनकर्ता ८ सबकी आत्मा ९ प्रसिद्ध १० व्यापक ११ संसार के कर्ता १२ उत्पत्ति-प्रलय-स्थान १३ जटावान् १४ गजव्याघ्रचर्मधारी १५ मत्थे पर जूरा बाँधनेवाले १६ विराट्रूप १७ विश्व के कर्ता १८ संहाररूप १९ मृगनयन २० सम्पूर्ण प्राणियों के हरणकर्ता २१ सर्वभोक्ता

---

१५ शिखंड=जटा का अग्रगुच्छ ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[22]प्रवृत्तिश्च [23]निवृत्तिश्च [24]नियतः [25]शाश्वतो [26]ध्रुवः ।
[27]श्मशानवासी [28]भगवान् [29]खचरो [30]गोचरो[31]ऽर्दनः ॥३३॥
[32]अभिवाद्यो [33]महाकर्मा [34]तपस्वी [35]भूतभावनः ।
[36]उन्मत्तवेषप्रच्छन्नः [37]सर्वलोकप्रजापतिः ॥ ३४ ॥
[38]महारूपो [39]महाकायो [40]वृषरूपो महायशाः ।
[42]महात्मा [43]सर्वभूतात्मा [44]विश्वरूपो [45]महाहनुः ॥३५॥
[46]लोकपालो[47]ऽन्तर्हितात्मा [48]प्रसादो [49]हयगर्दभिः ।
पवित्रं[50] च [51]महांश्चैव [52]नियमो [53]नियमाश्रितः ॥३६॥

---

२२ सबमें व्याप्त २३ सबसे पृथक् २४ तपस्वी २५ नित्य २६ अचल २७ श्मशान के वासी २८ ऐश्वर्यवान् २९ आकाशविहारी ३० शब्द में अर्थरूप ३१ कालरूप ३२ स्तुति के योग्य ३३ सृष्टि के कर्ता ३४ तपोमय ३५ पंचभूतनिर्माता ३६ उन्मत्त वेष से दुर्ज्ञेय ३७ सब लोकों की प्रजा के पति ३८ महारूप ३९ विराट्रूप ४० धर्मरूप ४१ महायशस्वी ४२ महात्मा ४३ सब प्राणियों की आत्मा ४४ संसाररूप ४५ बड़े मुखवाले ४६ इन्द्रादि अष्ट दिक्पाल रूप ४७ बोधरूप आत्मा ४८ आनन्दरूप ४९ खच्चर की सृष्टि के क्रम ५० पवित्र ५१ महान् ५२ नियमरूप ५३ नियमपालक

---

२७ श्मशान=मुर्दा फूँकने की जगह ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सर्वकर्मा[५४] स्वयंभूत[५५] आदि[५६]रादिकरो[५७] निधिः[५८] ।
सहस्राक्षो[५९] विशालाक्षः[६०] सोमो[६१] नक्षत्रसाधकः[६२] ॥ ३७ ॥
चन्द्रः[६३] सूर्यः[६४] शनिः[६५] केतु[६६]र्ग्रहो[६७] ग्रहपति[६८]र्वरः[६९] ।
अत्रि[७०]रत्र्यानमस्कर्ता[७१] मृगबाणार्पणो[७२]ऽनघः[७३] ॥ ३८ ॥
महातपा[७४] घोरतपा[७५] अदीनो[७६] दीनसाधकः[७७] ।
संवत्सरकरो[७८] मन्त्रः[७९] प्रमाणं[८०] परमं तपः[८१] ॥ ३९ ॥

---

५४ सब कर्मों के करनेवाले ५५ स्वयं उत्पन्न ५६ सबके आदि ५७ हिरण्यगर्भ (भूमि) के स्रष्टा ५८ धनरूप ५९ असंख्यनेत्रवाले ६० विशालनयन ६१ सोमलतारूप ६२ ज्योतिषी ६३ चन्द्ररूप ६४ सूर्यरूप ६५ शनिरूप ६६ केतुरूप ६७ राहुरूप ६८ मंगलरूप ६९ बृहस्पतिरूप तथा शुक्ररूप ७० बुधरूप ७१ अनसूया के नमस्कर्ता ७२ मृग-वेधनकर्ता ७३ पापरहित ७४ बड़े तपस्वी ७५ घोरतपी ७६ बड़े उदार ७७ दीनों के मनोरथपूरक ७८ कालचक्र के प्रवर्तक ७९ मंत्ररूप ८० वेदशास्त्रादिरूप ८१ आत्मा के दर्शक

---

६७ ग्रहः=ग्रहणकर्ता राहु । ६८ ग्रहपतिः=क्रूर मंगल । ६९ वरः=श्रेष्ठ, पूज्य, गुरु शुक्र । ७० अत्रिः=अत्रिगोत्र होने से बुध । ७१ अत्र्या=अनसूया । ७४ महातपाः=विश्वसृष्टिक्षम तप । ७५ घोरतपाः=विश्वसंहार-क्षम तप ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

योगी[८२] योग्यो[८३] महाबीजो[८४] महारेता[८५] महाबलः[८६] ।
सुवर्णरेताः[८७] सर्वज्ञः[८८] सुबीजो[८९] बीजवाहनः[९०] ॥४०॥
दशबाहु[९१]स्त्वनिमिषो[९२] नीलकण्ठ[९३] उमापतिः[९४] ।
विश्वरूपः[९५] स्वयंश्रेष्ठो[९६] बलवीरोऽबलो[९७] गणः[९८] ॥ ४१ ॥
गणकर्ता[९९] गणपति[१००]र्दिग्वासाः[१] काम[२] एव च ।
मन्त्रवित्[३]परमो मन्त्रः[४] सर्वभावकरो[५] हरः[६] ॥ ४२ ॥

---

८२ योगकर्ता ८३ योगयुक्त ८४ कारण के कारण ८५ महावीर्यरूप ८६ बड़े पराक्रमी ८७ सुवर्णमय ब्रह्मांड के उत्पादक ८८ सर्वज्ञ ८९ विकाररहित बीज ९० सब लोकों के संचालक ९१ दशभुजधारी ९२ सदादर्शक ९३ नीलकंठ ९४ ब्रह्मविद्या के स्वामी ९५ संसाररूप ९६ स्वयंश्रेष्ठ ९७ असाध्यकर्मकर्ता ९८ पच्चीस जड़ तत्त्वों के संख्याकारक ९९ सत्तारि गणों के कर्ता १०० गणों के पति ।

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका प्रथम शतक ।

१ नग्न २ अभिलाषारूप ३ मंत्रों के ज्ञाता ४ विचाररूप ५ सब भावों के उत्पादक ६ सबके आनन्ददाता

---

८५ स्थावर-वृक्षादि, जंगम-मनुष्यादि । ९४ उमा=ब्रह्मविद्या ।
९८ गणः=तत्त्वसमूह । ६ हर=विकारों को हरण करनेवाले ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कमण्डलुधरो[७] धन्वी[८] बाणहस्तः[९] कपालवान्[१०] ।
अशनी[११] शतघ्नी[१२] खड्गी[१३] पट्टिशी[१४] चायुधी[१५] महान्[१६] ॥४३॥
स्रुवहस्तः[१७] सुरूपश्च[१८] तेजस्[१९]तेजस्करो[२०] निधिः ।
उष्णीषी[२१] च सुवक्त्रश्च[२२] उदग्रो[२३] विनतस्तथा[२४] ॥४४॥
दीर्घश्च[२५] हरिकेशश्च[२६] सुतीर्थः[२७] कृष्ण[२८] एव च ।
शृगालरूपः[२९]* सिद्धार्थो[३०] मुण्डः[३१] सर्वशुभंकरः[३२] ॥४५॥
अजश्च[३३] बहुरूपश्च[३४] गन्धधारी[३५] कपर्द्यपि[३६] ।
ऊर्ध्वरेता[३७] ऊर्ध्वलिङ्ग[३८] ऊर्ध्वशायी[३९] नभःस्थलः[४०] ॥४६॥

---

७ कमंडलुधारी ८ धनुषधारी ९ बाणधारी १० ब्रह्मकपालधारी ११ वज्रधारी १२ शतघ्नीधारी १३ खड्गधारी १४ पट्टिशधारी १५ शूलधारी १६ पूज्य १७ स्रुवाधारी १८ सुंदर रूपवान् १९ प्रतापी २० तेजस्वियों में तेजस्वी २१ पगड़ी बाँधनेवाले २२ सुंदर मुखवाले २३ देदीप्यमान रूपवाले २४ विनीत २५ बड़े लम्बे २६ इन्द्रियों के प्रकाशक २७ परम उद्धारक २८ परब्रह्म २९ इन्द्ररूप ३० सिद्ध अर्थ ३१ संन्यासी ३२ सर्वकल्याणकर ३३ उत्पन्न न होनेवाले ३४ अनेकरूपवान् ३५ गंधधारी ३६ गंगाधारणकर्ता ३७ अच्छिन्न ब्रह्मचारी ३८ ऊर्ध्वलिंग ३९ सीधे लेटने वाले ४० आकाशवासी

---

१२ शतघ्नी=शस्त्र का नाम। १४ पट्टिश शस्त्र का नाम। २६ हरि=इन्द्रिय।

* किसी वणिक् द्वारा अपमान किए गए मरणप्राय किसी ब्राह्मण को इन्द्र ने शृगालरूप से सांत्वना दी थी।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्रिजटी[४१] चीरवासाश्च[४२] रुद्रः[४३]* सेनापति[४४]र्विभुः[४५] ।
अहश्चरो[४६] नक्तंचरा[४७]स्तिग्ममन्युः[४८] सुवर्चसः[४९] ॥ ४७ ॥
गजहा[५०] दैत्यहा[५१] कालो[५२] लोकधाता[५३] गुणाकरः[५४] ।
सिंहशार्दूलरूपश्च[५५] आर्द्रचर्माम्बरावृतः[५६] ॥ ४८ ॥
कालयोगी[५७] महानादः[५८] सर्वकाम[५९]श्चतुष्पथः[६०] ।
निशाचरः[६१] प्रेतचारी[६२] भूतचारी[६३] महेश्वरः[६४] ॥ ४९ ॥

---

४१ तीन जटाधारी ४२ कौपीनधारी ४३ सबके प्राणरूप ४४ सेना के पति ४५ व्यापक ४६ दिन में फिरनेवाले ४७ रात में फिरनेवाले ४८ तीव्रक्रोधी ४९ दिव्य तेजवाले ५० गजासुरहंता ५१ दैत्यों के नाशक ५२ समयरूप ५३ लोकधारक ५४ गुणों की खानि ५५ सिंह तथा शार्दूल पक्षीरूप ५६ आर्द्र चर्मधारी ५७ काल के वंचक ५८ अनहद शब्दरूप ५९ सम्पूर्ण कामनारूप ६० चार प्रकार से जिनकी उपासना हो ६१ वेतालादिरूप ६२ प्रेतों के सहचर ६३ भूतों के सहचर ६४ महेश्वर

---

* दैत्यों को रुलानेवाले अथवा रोनेवाले, यथाः—

यदरोदीः सुरश्रेष्ठ सोद्वेग इव बालकः ।
ततस्त्वामभिधास्यन्ति नाम्ना रुद्र इति प्रजाः ॥

श्रीमद्भा० ३ । १२ । १० ।

५८ अनहद शब्द=कान में उँगली दबाने से जो सुन पड़ता है ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहुभूतो[६५] बहुधरः[६६] स्वर्भानुरमितो[६७, ६८] गतिः[६९] ।
नृत्यप्रियो[७०] नित्यनर्तो[७१] नर्तकः[७२] सर्वलालसः[७३] ॥५०॥
घोरो[७४] महातपाः[७५] पाशो[७६] नित्यो[७७] गिरिरुहो[७८] नभः[७९] ।
सहस्रहस्तो[८०] विजयो[८१] व्यवसायो[८२] ह्यतन्द्रितः[८३] ॥५१॥
अधर्षणो[८४] धर्षणात्मा[८५] यज्ञहा[८६]❀ कामनाशकः[८७] ।
दक्षयागापहारी[८८] च सुसहो[८९] मध्यमस्तथा[९०] ॥५२॥
तेजोपहारी[९१] बलहा[९२] मुदितोऽर्थो[९३, ९४]ऽजितो[९५]ऽवरः[९६] ।

---

६५ बहुत होनेवाले ६६ बहुधारक ६७ राहुरूप† ६८ अनन्त ६९ मुक्तिरूप ७० तांडवनृत्य के प्रेमी ७१ सदा नृत्य करनेवाले ७२ नाचनेवाले ७३ सबके प्रेमी ७४ क्षुधातृषासंतोषादिधारी ७५ बड़े तपस्वी ७६ बंधनकर्ता ७७ सदा वर्तमान ७८ कैलासवासी ७९ आकाशरूप ८० हज़ारों हाथवाले ८१ विजयरूप ८२ उद्योगरूप ८३ आलस्यरहित ८४ कंपरहित ८५ साहसरूप ८६. बलियज्ञनाशकर्ता ८७ कामनाशक ८८ दक्षयज्ञ के नाशक ८९ बड़े सहनशील ९० उदासीन ९१ तेजहरणकर्ता ९२ इन्द्ररूप से बल दैत्य के नाशक ९३ प्रसन्न ९४ धनरूप ९५ अजेय ९६ जिससे कोई और बड़ा वरदायी नहीं है

❀ 'हन् हिंसागत्योः' अर्थात् हिंसा के अतिरिक्त गमन करना भी 'हन्' धातु का अर्थ है।

† "तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः" इत्यमरः।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गम्भीरघोषो[97] गम्भीरो[98] गम्भीरबलवाहनः[99] ॥ ५३ ॥
न्यग्रोधरूपो[100] न्यग्रोधो[1] वृक्षपर्णस्थितिर्विभुः[2][3] ।
सुतीक्ष्णदशनश्चैव[4] महाकायो[5] महाननः[6] ॥ ५४ ॥
विष्वक्सेनो[7] हरिर्यज्ञः[8][9] संयुगापीडवाहनः[10] ।
तीक्ष्णतापश्च[11] हर्यश्वः[12] सहायः[13] कर्मकालवित्[14] ५५
विष्णुप्रसादितो[15] यज्ञः[16] समुद्रो[17] वडवामुखः[18] ।
हुताशनसहायश्च[19] प्रशान्तात्मा[20] हुताशनः[21] ॥५६॥

---

९७ गम्भीर ध्वनिवाले ९८ अमित प्रभाववाले ९९ बड़ी सेना तथा बड़े वाहनवाले १०० संसारवृक्षरूप ।

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका द्वितीय शतक ।

१ वटवृक्षरूप २ वटवृक्ष के पत्र पर लेटनेवाले ३ विविध रूपधारी ४ पैने दाँतवाले ५ बड़े शरीरवाले ६ बड़े मुखवाले ७ विश्वव्यापिनी सेनावाले ८ आपदा के हरणकर्ता ९ यज्ञरूप १० वृषभध्वज ११ अग्नि की आत्मा १२ अतिवेगवान् घोड़ेवाले १३ सबके सहायक १४ कर्मकाल के यथार्थ ज्ञाता १५ विष्णु द्वारा प्रसन्न होनेवाले १६ विष्णुयज्ञरूप १७ समुद्ररूप १८ जल की अग्नि के मुखवाले १९ वायुरूप २० शान्तआत्मावाले २१ अग्निरूप

---

१० संयुग=संग्राम, आपीड=ध्वजा, वाहन=वृष । १२ हरि=अति वेगवान्, अश्व=घोड़े । १८ बड़वानल=जल की अग्नि ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उग्रतेजा[२२] महातेजा[२३] जन्यो[२४] विजयकालवित्[२५] ।
ज्योतिषामयनं[२६] सिद्धिः[२७] सर्वविग्रह[२८] एव च ॥५७॥
शिखी[२९] मुण्डी[३०] जटी[३१] ज्वाली[३२] मूर्तिजो[३३] मूर्द्धगो[३४] बली[३५] ।
वेणवी[३६] पणवी[३७] ताली[३८] खली[३९] कालकटङ्कटः[४०] ॥ ५८ ॥
नक्षत्रविग्रहमति[४१]र्गुणबुद्धि[४२]र्लयो[४३]ऽगमः[४४] ।
प्रजापति[४५]र्विश्वबाहु[४६]र्विभागः[४७] सर्वगो[४८]ऽमुखः[४९] ॥ ५९ ॥

---

२२ कठिन तेजवाले २३ बड़े तेजस्वी २४ संग्राम के साधक २५ विजयकाल के ज्ञाता २६ ज्योतिष के स्थान २७ जयरूप २८ सबके शरीर २९ शिखावाले (गृहस्थ) ३० संन्यासी ३१ जटाधारी (वानप्रस्थ) ३२ ज्वालावान् ३३ मूर्ति में होनेवाले ३४ मूर्द्धग ३५ बलधारी ३६ वीणाधारी ३७ पणवधारी . ३८ ताललगानेवाले ३९ अन्न के स्थल ४० यमराज की पाश को काटनेवाले ४१ नक्षत्रों के ज्ञाता ४२ जीवरूपी ४३ लीन होने के स्थान ४४ चंचलता-रहित ४५ प्रजाओं के स्वामी ४६ संसार के बल ४७ विभागकर्ता ४८ सबके कार्यरूप ४९ भोगरहित

---

२४ जन्य=संग्राम । ३४ मूर्द्धग=शिर या सहस्रार को जानेवाले ।
३९ खल=खेत वा अन्न का ढेर । ४२ गुण=जीव ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विमोचनः[५०] सुशरणो[५१] हिरण्यकवचोद्भवः[५२] ।
मेढ्रजो[५३] बलचारी[५४] च महीचारी[५५] स्रुतस्तथा[५६] ॥ ६० ॥
सर्वतूर्यनिनादी[५७] च सर्वातोद्यपरिग्रहः[५८] ।
व्यालरूपो[५९] गुहावासी[६०] गुहो[६१] माली[६२] तरङ्गवित्[६३] ॥ ६१ ॥
त्रिदशस्त्रिकालधृत्[६४][६५] कर्मसर्वबन्धविमोचनः[६६] ।
बन्धनस्त्वसुरेन्द्राणां[६७] युधि शत्रुविनाशनः[६८] ॥ ६२ ॥
सांख्यप्रसादो[६९] दुर्वासाः[७०] सर्वसाधुनिषेवितः[७१] ।
प्रस्कन्दनो[७२] विभागज्ञो[७३] अतुल्यो[७४] यज्ञभागवित्[७५] ॥ ६३ ॥

---

५० संसारबंधन से छुड़ानेवाले ५१ शरणागतवत्सल ५२ हिरण्यकवच से उद्भूत ५३ मेढ्र द्वारा होनेवाले ५४ वन में विचरनेवाले ५५ पृथ्वी में घूमनेवाले ५६ सर्वत्र व्याप्त ५७ सब बाजा बजानेवाले ५८ पशुपति ५९ शेषरूप ६० गुफा के वासी ६१ स्वामिकार्त्तिक ६२ वनमालाधारी ६३ आनन्दी ६४ प्राणियों के जन्मस्थिति मरणरूप ६५ भूत भविष्य वर्तमान के धारणकर्ता ६६ समस्त कर्मबन्धनों से छुड़ानेवाले ६७ वामनरूप ६८ संग्राम में शत्रु के नाशक ६९ सांख्यशास्त्र के फलरूप ७० दुर्वासा (रुद्र) ७१ सर्वसाधुगणों से पूजित ७२ ब्रह्मादिकों के भी शासक ७३ कर्मफल के अनुसार भाग्य के निर्माता ७४ उपमारहित ७५ यज्ञ में सबके भागों के ज्ञाता

---

५४ बल=वन । ५६ स्रुत=सर्वत्र व्याप्त ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सर्ववासः सर्वचारी दुर्वासा वासवोऽमरः ।
हैमो हेमकरोऽयज्ञः सर्वधारी धरोत्तमः ॥९४॥
लोहिताक्षो महाक्षश्च विजयाक्षो विशारदः ।
संग्रहो निग्रहः कर्ता सर्पचीरनिवासनः ॥९५॥
मुख्यो मुख्यश्च देहश्च काहलिः सर्वकामदः ।
सर्वकालप्रसादश्च सुबलो बलरूपधृत् ॥ ९६ ॥
सर्वकामवरश्चैव सर्वदः सर्वतोमुखः ।

---

७६ हर जगह रहनेवाले ७७ सर्वत्र घूमनेवाले ७८ जिसका वासस्थान दुर्लभ है ७९ इन्द्र ८० मृत्युरहित ८१ हिम के समान रूपवाले ८२ सुवर्ण के कर्ता ८३ निष्कर्मा ८४ सम्पूर्ण कर्मफल के धारणकर्ता ८५ पृथ्वीधारणकर्ताओं में उत्तम ८६ रक्तनेत्र ८७ बड़े धारणकर्ता ८८ विजयरूपी रथवाले ८९ पंडित ९० संग्रहकर्ता ९१ दंडदाता ९२ कर्ता ९३ सर्प-चीरधारी ९४ प्रधान ९५ सर्वदेवतामय ९६ अत्यन्त पुष्ट ९७ काहलधारी ९८ सब मनोरथों को देनेवाले ९९ सदा प्रसन्न १०० परपीड़ापहारी बलवाले ।

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका तृतीय शतक ।

१ बलरामजी के रूप २ सब कामनाओं के वरदानरूप ३ सब के दाता ४ चतुर्दिक्षु मुखवाले

---

८२ हिम=बरफ़ । ९७ काहल=बाजा का नाम ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आकाशनिर्विरूपश्च[5] निपाती[6] ह्यवशः[7] खगः[8] ॥ ६७ ॥
रौद्ररूपो[9]ऽंशु[10]रादित्यो[11] बहुरश्मिः[12] सुवर्चसी[13] ।
वसुवेगो[14] महावेगो[15] मनोवेगो[16] निशाचरः[17] ॥ ६८ ॥
सर्ववासी[18] श्रियावासी[19] उपदेशकरो[20]ऽकरः[21] ।
मुनि[22]रात्मनिरालोकः[23] संभग्न[24]श्च सहस्रदः[25] ॥ ६९ ॥
पक्षी[26] च पक्षरूप[27]श्च अतिदीप्तो[28] विशाम्पतिः[29] ।
उन्मादो[30] मदनः[31] कामो[32] ह्यश्वत्थो[33]ऽर्थकरो[34] यशः[35] ७०

---

५ आकाश की बिजुली के समान ६ देहधारी ७ अवश ८ आकाशचारी ९ बड़े कराल १० अंशुरूप ११ सूर्यरूप १२ अनंत किरणोंवाले १३ दिव्य तेजधारी १४ वायु के समान वेगवान् १५ बड़े वेगवाले १६ मन की गति से भी शीघ्र गतिमान् १७ अविद्या में घूमनेवाले १८ सबके शरीर में होनेवाले १९ लक्ष्मी के सहवासी २० उपदेष्टा २१ बुद्धि के प्रवर्तक २२ मौनव्रतधारी २३ जीव देहादि उपाधियों से पृथक् होकर देखनेवाले २४ अच्छे प्रकार सेवित २५ अनन्त धन के दाता २६ गरुड़रूप २७ पक्षरूप २८ कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान २९ प्रजापति ३० मोहनकर्ता ३१ कामरूप ३२ विषयरूप ३३ संसारवृक्ष ३४ धन के दाता ३५ कीर्त्ति के दाता

---

६ निपाती=देहगर्त में गिरनेवाले । ७ अवश=जो किसी के अधीन न हो। १० अंशु=देवता का भेद। १७ निशा=अविद्या। २१ अकर=चुपचाप उपदेश करनेवाले। २४ भग्न=सेवित। २७ पक्षरूप=पक्षियों के पंख।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वामदेवश्च[३६] वामश्च[३७] प्राग्[३८] दक्षिणश्च[३९] वामनः[४०] ।
सिद्धयोगी[४१] महर्षिश्च[४२] सिद्धार्थः[४३] सिद्धसाधकः[४४] ७१
भिक्षुश्च[४५] भिक्षुरूपश्च[४६] विपणो[४७] मृदुर[४८]व्ययः[४९] ।
महासेनो[५०] विशाखश्च[५१] षष्टिभागो[५२] गवांपतिः[५३] ॥७२॥
वज्रहस्तश्च[५४] विष्कम्भी[५५] चमूस्तम्भन[५६] एव च ।
वृत्तावृत्तकर[५७]स्तालो[५८] मधुर्[५९]मधुकलोचनः[६०] ॥ ७३ ॥
वाचस्पत्यो[६१] वाजसनो[६२] नित्यमाश्रमपूजितः[६३] ।

---

३६ कर्मफल के देव ३७ कर्मफलरूप ३८ सबके आदि ३९ तीनलोक नापनेवाले ४० वामनरूप ४१ सनत्कुमारादिरूप ४२ वशिष्ठरूप ४३ ऋषभ दत्तात्रेयादि रूप ४४ याज्ञवल्क्यादि विद्वान् संन्यासी ४५ चिह्नधारी हंस ४६ परमहंस ४७ व्यापार-रहित ४८ सबके अभयदाता ४९ निर्विकार ५० बड़े सेनावान् ५१ सहायक ५२ साठि तत्त्व जिनके भोज्य ५३ इंद्रियों के पति ५४ वज्रधारी ५५ विस्ताररूप ५६ दैत्यसेना के स्तम्भन-कर्ता ५७ युद्ध में मण्डलाकार रथ चलानेवाले ५८ संसाराधार के ज्ञाता ५९ वसंतऋतु ६० कोयल के समान नेत्रवाले ६१ देवपुरोहित ६२ वेद की शाखा ६३ नित्य आश्रम में पूजित

---

३६ वाम=कर्मफल। ५२ भाग=भोज्य। ५५ विष्कम्भ=विस्तार। ५७ वृत्त=युद्ध। ६० मधुक=कोयल पक्षी। ६१ देवपुरोहित=बृहस्पति।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[६४]ब्रह्मचारी [६५]लोकचारी [६६]सर्वचारी [६७]विचारवित् ॥७४॥
[६८]ईशान [६९]ईश्वरः [७०]कालो [७१]निशाचारी [७२]पिनाकवान् ।
[७३]निमित्तस्थो [७४]निमित्तं च [७५]नन्दिर्[७६]नन्दिकरो [७७]हरिः ७५
[७८]नन्दीश्वरश्च [७९]नन्दी च [८०]नन्दनो [८१]नन्दिवर्द्धनः ।
[८२]भर्गहारी [८३]निहन्ता च [८४]कालो [८५]ब्रह्मा [८६]पितामहः ॥७६॥
[८७]चतुर्मुखो [८८]महालिङ्गश्[८९]चारुलिङ्गस्तथैव च ।
[९०]लिङ्गाध्यक्षः [९१]सुराध्यक्षो [९२]योगाध्यक्षो [९३]युगावहः ७७
[९४]बीजाध्यक्षो [९५]बीजकर्ता [९६]अध्यात्मानुगतो [९७]बलः ।

---

६४ ब्रह्मचारी ६५ संसार में विचरनेवाले ६६ सर्वत्र व्याप्त होनेवाले ६७ विचार के ज्ञाता ६८ इष्टदेव ६९ ईश्वर ७० कर्मों के गणक ७१ प्रलयरूपी निशा में विचरनेवाले ७२ पिनाक धनुधारी ७३ कारण में स्थित ७४ कारणरूप ७५ संपदारूप ७६ धन के दाता ७७ हनुमान् रूपधारी ७८ नंदिगण के ईश्वर ७९ नंदीगणरूप ८० आनन्द के दाता ८१ नंदि के वर्धन* ८२ इंद्रादिकों की भी सम्पत्ति हरनेवाले ८३ मृत्युरूप ८४ चौंसठ कालों के निवासस्थल ८५ बड़े माहिम्न ८६ पिता के पिता ८७ ब्रह्मा ८८ देवासुरादिकों से पूजित लिंग ८९ रमणीय वेषधारी ९० प्रवृत्ति निवृत्ति के विधानकर्ता ९१ देवताओं के स्वामी ९२ योग के स्वामी ९३ युगों के प्रवृत्ति निवृत्तिकर्ता ९४ धर्म, अधर्म के फलदाता ९५ बीज के कर्ता ९६ अध्यात्मविद्या के साधक ९७ बलरूप

---

* दी हुई सम्पत्ति को भी नष्ट करनेवाले (नीलकण्ठ) ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इतिहासः[९८] सकल्पश्च[९९] गौतमोऽथ[१००] निशाकरः ॥७८॥
दम्भो[२] ह्यदम्भो[३] वैदम्भो[४] वैश्यो[५] वशंकरः[६] कलिः[७] ।
लोककर्ता[८] पशुपतिर्[९] महाकर्ता[१०] ह्यनौषधः[११] ॥ ७९ ॥
अक्षरं[१२] परमं ब्रह्म[१३] बलवच्छक्र[१४][१५] एव च ।
नीति[१६]र्ह्यनीतिः[१७] शुद्धात्मा[१८] शुद्धो[१९] मान्यो[२०] गतागतः[२१] ॥
बहुप्रसादः[२२] सुस्वप्नो[२३] दर्पणोथ[२४] त्वमित्रजित्[२५] ।

---

९८ महाभारतादि इतिहासरूप ९९ कल्परूप १०० गौतमरूप ।

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका चतुर्थ शतक ।

१ चन्द्र २ दम्भरूप ३ दम्भरहित ४ सज्जनों में होनेवाले ५ भक्तवश्य ६ वशकारक ७ वैर करानेवाले ८ चौदह भुवनों के निर्माता ९ ब्रह्मादिकों के पति १० पंचतत्त्व के कर्ता ११ अभोक्ता १२ नाशरहित १३ आनन्दरूप १४ बलाभिमानी देवतारूप १५ इन्द्र १६ नीतिरूप १७ अनीतिरूप १८ विमल चित्तवाले १९ दोषरहित २० सत्कारयोग्य २१ आने-जानेवाले संसाररूप २२ अति प्रसन्नचित्त २३ दिव्य स्वप्नरूप २४ दर्पण के समान (संसार जिसके अंतर्गत) २५ शत्रुजेता

---

९९ कल्प=यज्ञकल्प प्रयोगविधि मीमांसा न्याय इत्यादि । १०० गौतम=तर्कशास्त्र रचयिता । १ चन्द्र=चान्द्र व्याकरण के रचयिता । २ दम्भ=पाखंड । ११ अभोक्ता=भोजन न करनेवाले ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[२६]वेदकारो [२७]मन्त्रकारो [२८]विद्वान् [२९]समरमर्दनः ॥ ८१ ॥
[३०]महामेघनिवासी च [३१]महाघोरो [३२]वशीकरः ।
[३३]अग्निर्[३४]ज्वालो [३५]महाज्वालो [३६]अतिधूम्रो [३७]हुतो हविः[३८] ॥
[३९]वृषणः [४०]शङ्करो [४१]नित्यवर्चस्वी [४२]धूमकेतनः ।
[४३]नीलस्तथा[४४]ङ्गलुब्धश्च [४५]शोभनो [४६]निरवग्रहः ॥ ८३ ॥
[४७]स्वस्तिदः [४८]स्वस्तिभावश्च [४९]भागी [५०]भागकरो [५१]लघुः ।
[५२]उत्सङ्गश्च [५३]महाङ्गश्च [५४]महागर्भपरायणः ॥ ८४ ॥

---

२६ वेदों के कर्ता २७ मंत्रों के कर्ता २८ विद्वान् २९ युद्ध में शत्रुओं के मदनकर्ता ३० प्रलयकाल के मेघों में निवास करनेवाले ३१ बड़े कठिन ३२ वश करनेवाले ३३ संहारकारी अग्नि ३४ अग्नि के समान तेज ज्वालावाले ३५ उससे भी बड़ी तेज ज्वालावाले ३६ अत्यन्त धूमवान् ३७ होम के प्रेमी ३८ शाकल्यरूप ३९ धर्मरूप ४० कल्याण के कर्ता ४१ नित्य तेजवान् ४२ अग्निरूप ४३ नीलम के समान कांतिधारी ४४ नीलवर्ण के प्रेमी ४५ कल्याण के कारण ४६ मनोरथ-पूरक ४७ कल्याण के दाता ४८ सबका कल्याण चाहनेवाले ४९ यज्ञ में भागवान् ५० यज्ञ में भाग के वितरणकर्ता ५१ शीघ्री ५२ एकाकी ५३ महालिंगरूप ५४ संतानोत्पादक कंदर्प

---

५२ एकाकी=अकेले ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[५५]कृष्णवर्णः [५६]सुवर्णश्च [५७]इन्द्रियं सर्वदेहिनाम् ।
[५८]महापादो [५९]महाहस्तो [६०]महाकायो [६१]महायशाः ॥ ८५ ॥
[६२]महामूर्धा [६३]महामात्रो [६४]महानेत्रो [६५]निशालयः ।
[६६]महान्तको [६७]महाकर्णो [६८]महोष्ठश्च [६९]महाहनुः ॥ ८६ ॥
[७०]महानासो [७१]महाकम्बुर्[७२]महाग्रीवः [७३]श्मशानभाक् ।
[७४]महावक्षा [७५]महोरस्को [७६]ह्यन्तरात्मा [७७]मृगालयः ॥ ८७ ॥
[७८]लम्बनो [७९]लम्बितोष्ठश्च [८०]महामायः [८१]पयोनिधिः ।

---

५५ कृष्णवर्ण (विष्णुरूप) ५६ श्वेतवर्ण (साम्बरूप) ५७ सबमें इंद्रियरूप ५८ बड़े पैरवाले ५९ बड़े हाथवाले ६० बड़े शरीरवाले ६१ बड़े यशस्वी ६२ बड़े शिरवाले ६३ बड़े प्रमाणरूप ६४ बड़े नेत्रवाले ६५ अविद्या के घर ६६ मृत्यु के मृत्यु ६७ बड़े कानवाले ६८ बड़े ओष्ठवाले ६९ बड़ी दाढ़ीवाले ७० बड़ी नासिकावाले ७१ बड़े कंठवाले ७२ बड़ी ग्रीवावाले ७३ देह-रूपी बंधन के छुड़ानेवाले ७४ बड़े वक्षःस्थलवाले ७५ बड़े हृदयवाले ७६ हृदय की आत्मा ७७ मृगशावकधारी ७८ जिनमें समस्त ब्रह्मांड इतरीफल की भाँति लटके हैं ७९ प्रलय में लम्बे ओष्ठों से विश्व को ग्रसनेवाले ८० बड़े मायावी व बड़ी मायावाले ८१ क्षीर के समुद्र

---

७७ मृगशावक=मृग का बच्चा ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[८२]महादन्तो [८३]महादंष्ट्रो [८४]महाजिह्वो [८५]महामुखः ॥ ८८ ॥
[८६]महानखो [८७]महारोमा [८८]महाकोशो [८९]महाजटः ।
[९०]प्रसन्नश्च [९१]प्रसादश्च [९२]प्रत्ययो [९३]गिरिसाधनः ॥ ८९ ॥
[९४]स्नेहनोऽ[९५]स्नेहनश्चैव [९६]अजितश्च [९७]महामुनिः ।
[९८]वृक्षाकारो [९९]वृक्षकेतु[१००]रनलो वायुवाहनः ॥ ९० ॥
[२]गण्डली मेरु[३]धामा च देवा[४]धिपतिरेव च ।
[५]अथर्वशीर्षः [६]सामास्य [७]ऋक्सहस्रामितेक्षणः ॥ ९१ ॥

---

८२ बड़े दाँतवाले ८३ बड़े डाढ़ोंवाले ८४ बड़ी जीभवाले ८५ बड़े मुखवाले ८६ बड़े नखवाले (नृसिंहरूप) ८७ बड़े रोमवाले (वराहरूप) ८८ बड़े उदरवाले ८९ बड़ी जटावाले ९० प्रसन्नरूप ९१ सदा प्रसन्न ९२ अनुभवरूप ९३ पर्वत है साधन स्थान जिनका ९४ प्रेमवान् ९५ अप्रेमी ९६ विजयी ९७ बड़े मननशील ९८ संसारवृक्ष के आकारवाले ९९ संसार वृक्ष है चिह्न जिनका १०० अग्निरूप ।

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका पंचम शतक ।

१ वायुवाहन २ छोटे पर्वतों के विहारी ३ पर्वत के वासी ४ देवताओं के स्वामी ५ अथर्वण वेद जिनका शिर ६ सामवेद जिनका मुख ७ ऋग्वेद की ऋचाएँ जिनके हजारों नेत्र हैं

---

१ वायुवाहन=हवा के सवार ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यजुःपादभुजो[8] गुह्यः[9] प्रकाशो[10] जङ्गमस्[11]तथा ।
अमोघार्थः[12] प्रसादश्[13]च अभिगम्यः[14] सुदर्शनः[15] ॥६२॥
उपकारः[16] प्रियः[17] सर्वः[18] कनकः[19] काञ्चनच्छविः[20] ।
नाभिर्[21]नन्दिकरो[22] भावः[23] पुष्करस्थपतिः[24] स्थिरः[25] ॥६३॥
द्वादशस्[26]त्रासनश्[27]चाद्यो[28] यज्ञो[29] यज्ञसमाहितः[30] ।
नक्तं[31] कलिश्[32]च कालश्[33]च मकरः[34] कालपूजितः[35] ॥६४॥

---

८ यजुर्वेद जिनके हाथ पैर ९ उपनिषद् जिनका गुह्यस्थल १० कर्मकांड जिनका प्रकाश ११ मनुष्य पशु आदि के रूप १२ जिनसे याचना सफल हो १३ दयालु १४ सुख से प्राप्य १५ दिव्य दर्शनीय १६ उपकारी १७ सुखद १८ दर्शनदाता १९ सुवर्ण-रूप २० सुवर्ण के समान छविधारी २१ भुवनों के मध्यदेश २२ यज्ञफल के पूरक २३ श्रद्धारूप २४ ब्रह्मांडों के स्वामी २५ पर्वतरूप २६ मोक्षरूप २७ भय उत्पादक २८ संसार से प्राचीन २९ यज्ञरूप ३० यज्ञ द्वारा प्राप्त ३१ महामोहरूप ३२ काम क्रोध लोभरूप ३३ जन्ममरण समयरूप ३४ मकराकार शिशुमार चक्ररूप ३५ मृत्यु से पूजित

---

२६ गर्भवास प्रभृति मरण पर्यन्त मनुष्यों की दश दशाएँ होती हैं। ग्यारवीं दशा स्वर्ग और बारहवीं दशा मोक्ष कहलाती है। ३४ शिशु-मारचक्र=समयचक्र ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सर्गणो[36] गणकारश्च[37] भूतवाहनसारथिः[38] ।
भस्मशयो[39] भस्मगोप्ता[40] भस्मभूतस्तरुर्गणः[41,42,43] ॥ ६५ ॥
लोकपालस्तथाऽलोको[44,45] महात्मा[46] सर्वपूजितः[47] ।
शुक्लस्त्रिशुक्लः[48,49] संपन्नः[50] शुचिर्भूतनिषेवितः[51,52] ॥ ६६ ॥
आश्रमस्थः[53] क्रियावस्थो[54] विश्वकर्ममतिर्वरः[55,56] ।
विशालशाखस्ताम्रोष्ठो[57,58] ह्यम्बुजालः[59] सुनिश्चलः[60] ६७
कपिलः[61] कपिशः[62] शुक्ल आयुश्चैव[63,64] परोऽपरः[65,66] ।

---

३६ गणों से युक्त ३७ भक्तों को अपनानेवाले ३८ ब्रह्मा हैं सारथी जिसके ३९ भस्म में शयन करनेवाले ४० संसार को भस्म में गुप्त करनेवाले ४१ भस्मरूप व भस्म होनेवाले ४२ कल्पवृक्ष ४३ भृंगि नाम के गणवाले ४४ चतुर्दश भुवनों के पालक ४५ लोकों से परे ४६ पूर्ण ४७ सबसे पूज्य ४८ शुद्ध ४९ शरीर वचन मन के शुद्ध ५० संसार में एक ५१ संगरहित ५२ पूर्व के आचार्यगणों से पूजित ५३ आश्रमों में स्थित ५४ क्रिया में स्थित ५५ विश्वकर्मा रूप ५६ लक्ष्मी आदिकों के रूप ५७ दीर्घबाहु ५८ लाल ओठवाले ५९ समुद्र-रूप ६० पर्वतादिरूप ६१ कपिलदेवरूप ६२ कपिश ६३ स्वच्छ ६४ जीवन के समय ६५ प्राचीन ६६ नवीन

---

३८ भूतवाहन=ब्रह्मा । ३९ भस्म=पाप भस्मकारी । ५३ आश्रम= १ ब्रह्मचर्य, २ गृहस्थ, ३ वानप्रस्थ, ४ संन्यास । ५४ क्रिया=धर्म का पूर्व यज्ञादि रूप । ५५ विश्वकर्मा=देवशिल्पी (थवई) । ५६ श्रियत इति वरः । ६२ कपिश=ध्यानकर्ता ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गन्धर्वो[६७] ह्यदितिस्तार्क्ष्यः[६८][६९] सुविज्ञेयः[७०] सुशारदः[७१] ॥ ६८ ॥
परश्वधायुधो[७२] देवो[७३] अनुकारी[७४] सुबान्धवः[७५] ।
तुम्बवीणो[७६] महाक्रोध[७७] ऊर्ध्वरेता[७८] जलेशयः[७९] ॥ ६९ ॥
उग्रो[८०] वंशकरो[८१] वंशो[८२] वंशनादो[८३] ह्यनिन्दितः[८४] ।
सर्वाङ्गरूपो[८५] मायावी[८६] सुहृदो[८७] ह्यनिलोऽनलः[८८][८९] ॥ १०० ॥
बन्धनो[९०] बन्धकर्ता[९१] च सुबन्धनविमोचनः[९२] ।
सयज्ञारिः[९३] सकामारिर्[९४] महादंष्ट्रो[९५] महायुधः[९६] ॥ १०१ ॥

---

६७ चित्ररथादि गंधर्वरूप ६८ देवमाता ६९ गरुड़रूप ७० सुख से जाननेयोग्य ७१ मधुरभाषी ७२ परशु आयुधधारी (परशुराम) ७३ विजय के इच्छुक ७४ अनुकरण करनेवाले ७५ अर्जुन के सखा ७६ दो तोंबियों की वीणावाले ७७ प्रलयकाल के महाक्रोध ७८ देव-मनुष्यों के उत्पादक ७९ जलशायी ८० कठिन ८१ वंश के प्रवर्तक ८२ वंशरूप ८३ बाँसुरी बजानेवाले ८४ निंदारहित ८५ सर्वाङ्गसुंदर ८६ मायावी ८७ उपकारी ८८ वायुरूप ८९ अग्निरूप ९० संसाररूपी पाश ९१ संसाररचयिता ९२ अच्छे प्रकार भवबंधन के मोचक ९३ दैत्यों के साथी ९४ योगियों के सहित ९५ बड़े दाँतवाले ९६ बड़े आयुधधारी

---

७६ तुम्बवीण=रुद्रवीण ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहुधानिन्दितः[97] शर्वः[98] शङ्करः[99] शंकरो[100]ऽनघः ।
अमरेशो[2] महादेवो[3] विश्वदेवः[4] सुरारिहा[5] ॥ १०२ ॥
अहिर्बुध्न्यो[6]ऽनिलाभश्च[7] चेकितानो[8] हविस्[9]तथा ।
अजैकपाच्च[10] कापाली[11] त्रिशंकु[12]रजितः[13] शिवः[14] ॥ १०३ ॥
धन्वन्तरि[15]र्धूमकेतुः[16] स्कन्दो[17] वैश्रवणस्[18]तथा ।
धाता[19] शक्रश्[20]च विष्णुश्[21]च मित्रस्[22]त्वष्टा[23] ध्रुवो[24] धरः[25] १०४
प्रभावः[26] सर्वगो वायु[27]रर्यमा[28] सविता[29] रविः[30] ।

---

९७ दारुका वन में ऋषियों द्वारा निंदित ९८ दारुका वनवासी मुनियों के मोहनकर्ता ९९ कल्याण के कर्ता १०० सर्वसंशयदाहक

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका षष्ठ शतक ।

१ पापरहित २ देवताओं के ईश ३ महादेव ४ विष्णुरूप ५ असुरहन्ता ६ शेषरूप ७ वायु की भाँति अनुभवरूप ८ खूब जाननेवाले ९ हवि के भोक्ता १० ग्यारह रुद्रों में कोई ११ ब्रह्मांडपति १२ जीवरूप १३ संसार से परे १४ उपाधिरहित १५ महावैद्य १६ महा उत्पातरूप १७ स्कंदरूप १८ वैश्रवणरूप १९ धाता २० शक्र २१ विष्णु २२ मित्र २३ त्वष्टा २४ ध्रुव २५ धर २६ प्रभाववाले वसु २७ वायुरूप २८ अर्यमा २९ सविता ३० रवि

---

९ हवि=शाकल्य । ११ कपाल=ब्रह्मांड । १७ से २५ तक देवनाम । २८ से ३० तक देवनाम ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उषंगुश्च[31] विधाता[32] च मान्धाता[33] भूतभावनः[34] ॥१०५॥
विभुर्[35] वर्णविभावी[36] च सर्वकामगुणावहः[37] ।
पद्मनाभो[38] महागर्भश्[39] चन्द्रवक्त्रो[40]ऽनिलो[41]ऽनलः[42] १०६
बलवांश्[43] चोपशान्तश्[44] च पुराणः[45] पुण्यचंचुरी[46][47] ।
कुरुकर्ता[48] कुरुवासी[49] कुरुभूतो[50] गुणौषधः[51] ॥ १०७ ॥
सर्वाशयो[52] दर्भचारी[53] सर्वेषां प्राणिनां पतिः[54] ।
देवदेवः[55] सुखासक्तः[56] सदसत्[57][58] सर्वरत्नवित्[59] ॥१०८॥

---

३१ दाहकारी किरणवान् ३२ विविध प्रकार से पोषण करनेवाले ३३ जीवों के पालक ३४ प्राणियों के रक्षक ३५ नाना प्रकार के रूप में होनेवाले ३६ श्वेतपीतादि वर्णों के प्रकाशक ३७ सब कार्य तथा गुणों के समूह ३८ कमलनाभ ३९ ब्रह्मादिकों को गर्भ में धारण करनेवाले ४० सुन्दररूप ४१ वायु ४२ अग्नि ४३ बलवान् ४४ उपशान्त ४५ पुराण ४६ पुण्य द्वारा जानने योग्य ४७ लक्ष्मीरूप ४८ दो कुरुक्षेत्र (कर्मस्थान, उपासनास्थान) के निर्माता ४९ दो कुरुक्षेत्रों के वासी ५० दो कुरुक्षेत्रों की आत्मा ५१ औषध के समान गुणों के दीपक ५२ सम्पूर्ण आशयों के ज्ञाता ५३ कुश पर दिये हुए हवि के भोक्ता ५४ सम्पूर्ण प्राणियों के पति ५५ देवताओं के देवता ५६ सुख में आसक्त ५ अच्छे कार्य के कर्ता ५८ असत् के कारण ५९ सम्पूर्ण रत्नों के ज्ञाता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

[६०]कैलासगिरिवासी च [६१]हिमवद्गिरिसंश्रयः ।
[६२]कूलहारी [६३]कूलकर्ता [६४]बहुविद्यो [६५]बहुप्रदः ॥ १०९ ॥
[६६]वणिजो [६७]वर्धकी [६८]वृक्षो [६९]बकुलश्[७०]चन्दनश्[७१]छदः ।
[७२]सारग्रीवो [७३]महाजत्रुर[७४]लोलश्च [७५]महौषधः ॥ ११० ॥
[७६]सिद्धार्थकारी [७७]सिद्धार्थश्छन्दोव्याकरणोत्तरः ।
[७८]सिंहनादः [७९]सिंहदंष्ट्रः [८०]सिंहगः [८१]सिंहवाहनः ॥१११॥
[८२]प्रभावात्मा [८३]जगत्कालस्थालो [८४]लोकहितस्[८५]तरुः ।

---

६० कैलासगिरि के वासी ६१ बरफ के समान पर्वत पर बैठनेवाले ६२ कूल के हरणकर्ता ६३ कूल के कर्ता ६४ बड़े विद्वान् ६५ बड़े दाता ६६ व्यापारी ६७ संसार-वृक्ष के शिल्पी ६८ संसार-वृक्षरूप ६९ बकुल ७० चन्दन ७१ छद ७२ पुष्ट स्कंधवाले ७३ महाजत्रु ७४ अचंचल ७५ अन्नरूप (जव) ७६ अर्थ के सिद्धकर्ता ७७ छन्द-व्याकरण के सिद्ध अर्थ ७८ सिंह के समान नादकर्ता ७९ सिंह के समान दाँतवाले ८० सिंह के सवार ८१ सिंहयुक्त रथवाले ८२ सत्तारूप ८३ काल है भोजन-पात्र जिसका ८४ संसार के हितू ८५ संसार से तारनेवाले

---

६२ कूल=नदी के दोनों तट । ६९ बकुल=वृक्ष का नाम । ७१ छद=सात पत्तेवाला वृक्ष । ७३ जत्रु=कंठ तथा स्कंध के नीचे का भाग ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सारङ्गो नवचक्राङ्गः केतुमाली सभावनः ॥११२॥
भूतालयो भूतपतिः अहोरात्रमनिन्दितः ॥ ११३॥
वाहिता सर्वभूतानां निलयश्च विभुर्भवः ।
अमोघः संयतो ह्यश्वो भोजनः प्राणधारकः॥ ११४॥
धृतिमान् मतिमान् दक्षः सत्कृतश्च युगाधिपः ।
गोपालिर्गोपतिर्ग्रामो गोचर्मवसनो हरिः ११५॥
हिरण्यबाहुश्च तथा गुहापालः प्रवेशिनाम् ।

---

८६ सारंग ८७ नवचक्रांग ८८ केतुमाली ८९ सभा के रक्षक ९० प्राणियों के स्थान ९१ प्राणियों के पति ९२ दिनरात्रि-रूप ९३ निन्दारहित ९४ सब प्राणियों को कार्य में लगानेवाले ९५ सब प्राणियों के स्थान ९६ भुवनों से पृथक् ९७ होने-वाले ९८ अमोघ ९९ धारणा-ध्यान-समाधिवान् १०० उच्चैश्रवा अश्वरूप ।

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका सप्तम शतक ।

१ भोजनरूप २ प्राण के आधार ३ धारणावाले ४ बुद्धिमान् ५ चतुर ६ सत्कृत ७ युगों के स्वामी ८ इंद्रियों के पालक ९ किरणों के पति सूर्य १० समूहवान् ११ गोचर्मवसनधारी १२ भक्तों के दुःखनाशक १३ रमणीय भुजावाले १४ समाधिस्थ योगियों के शरीररक्षक

---

८६ सारंग=पक्षी का नाम। ८७ चक्रांग=हंस। ८८ केतुमाली=शिखावाले पक्षी मयूर आदि। ९८ अमोघ=अचूक।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रकृष्टा[15]रिर्महा[16]हर्षो जितका[17]मो जितेन्द्रि[18]यः ॥ ११६ ॥
गान्धार[19]श्च सुवास[20]श्च तपः[21]सक्ता रति[22]र्न[23]रः ।
महा[24]गीतो महानृ[25]त्या ह्यप्सरोग[26]णसेवितः ॥ ११७ ॥
महा[27]केतुर्महाधा[28]तुर्नै[29]कसानुचरश्चल[30]ः ।
आवे[31]दनीय आद[32]र्शः सर्वगन्धसुखा[33]वहः ॥ ११८ ॥
तोर[34]णस्तार[35]णो वा[36]तः परिधी[37] पतिखे[38]चरः ।
संयोगो [39]वर्धनो वृ[40]द्धो अतिवृ[41]द्धो गुणा[42]धिकः ॥ ११९ ॥

---

१५ उत्तम साधक १६ बड़े आनन्दी १७ काम के जेता १८ जितेंद्रिय १९ गाँधार रागगायक २० उत्तम बासवाले २१ तप में आसक्त २२ प्रीतिरूप २३ विराट्रूप २४ बड़े गायक २५ बड़े नर्तक २६ अप्सराओं से सेवित २७ वृषभध्वज २८ सुमेरु पर्वतरूप २९ अनेक शिखरसंचारी ३० वश में न आनेवाले (दुर्ग्रह) ३१ प्रार्थना करने योग्य ३२ उपदेशरूप ३३ सम्पूर्ण विषय स्पर्शादिकों के सुखरूप ३४ पुर के द्वार ३५ विजयेच्छुकों को परिखा फँदानेवाले ३६ वायुरूप ३७ दुर्गरूप ३८ गरुड़रूप ३९ संयोग के हेतु (वीर्यरूप) वा सृष्टिवर्धक ४० गुणाधिक ४१ बड़े गुण वृद्ध ४२ अधिक गुण

---

१५ प्रकृष्टारि=कामादि । १९ गाँधार=स्वरविशेष । २० वास=वासस्थान । ३३ गंध=विषय स्पर्शादि । ३५ परिखा=खाई । ३७ दुर्ग=किला ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नित्य [४३]आत्मसहायश्च देवासुर[४४]पतिः [४५]पतिः ।
[४६]युक्तश्च [४७]युक्तबाहुश्च देवो दिवि [४८]सुपर्वणः ॥१२०॥
[४९]आषाढश्च [५०]सुषाढश्च [५१]ध्रुवोऽथ हरिणो [५२] [५३]हरः ।
वपुरावर्त[५४]मानेभ्यो [५५]वसुश्रेष्ठो महा[५६]पथः ॥ १२१ ॥
शिरो[५७]हारी विमर्शश्च सर्वलक्षण[५८]लक्षितः ।
[५९]अक्षश्च रथयोगी च [६०]सर्वयोगी महा[६१]बलः ॥१२२॥
[६२]समाम्नायो[६३]ऽसमाम्नायस्तीर्थदेवो [६४] [६५]महारथः ।

---

४३ सदा अपने सहाय ४४ देवता तथा असुरों के पति ४५ सबके पति ४६ संग्राम में सन्नद्ध ४७ शत्रुमर्दन बाहुवाले ४८ स्वर्ग में इन्द्र के आराध्य ४९ सर्वसहनयोग्य सामर्थ्य के दाता ५० सरलता से सर्व सहनयोग्य सामर्थ्य के दाता वा उत्तम सहनशील ५१ स्थिर ५२ शुद्ध ५३ शूली ५४ स्वर्ग से पतित जीवों के शरीरदाता ५५ धन से भी बड़े ५६ दिव्य पुरुषों के मार्ग ५७ विचार से ब्रह्मा का शिर काटनेवाले क्रोध से नहीं ५८ सामुद्रिकशास्त्र के सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त ५९ रथ जोतनेवाले सारथी ६० सबको छूनेवाले ६१ बलशाली ६२ वेदरूप ६३ स्मृति, इतिहास, पुराण, आगमरूप ६४ तीर्थ के देवता ६५ पृथ्वी को रथ बनानेवाले

---

४६ सन्नद्ध=तैयार। ४८ सुपर्वा=इन्द्र । ५९ अक्ष=सारथी ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निर्जीवो[६६] जीवनो[६७] मन्त्रः[६८] शुभाक्षो[६९] बहुकर्कशः[७०] १२३
रत्नप्रभूतो[७१] रत्नाङ्गो[७२] महार्णवनिपानवित्[७३] ।
मूलं[७४] विशालो[७५] ह्यमृतो[७६] व्यक्ताव्यक्तस्[७७]तपोनिधिः[७८] १२४
आरोहणो[७९]ऽधिरोहश्[८०]च शीलधारी[८१] महायशाः[८२] ।
सेनाकल्पो[८३] महाकल्पो[८४] योगो[८५] युगकरो[८६] हरिः[८७] १२५
युगरूपो[८८] महारूपो[८९] महानागहनो[९०] वधः[९१] ।
न्यायनिर्वपणः[९२] पादः[९३] पण्डितो[९४] ह्यचलोपमः[९५] १२६॥

---

६६ जड़ जगत् के आत्मारूप ६७ अचेतन के चैतन्यदाता ६८ ओंकाररूप ६९ शान्त दृष्टिवाले ७० बड़े कठिन ७१ रत्नों के भाण्डार ७२ रत्नों के समान कान्तियुक्त अंगवाले ७३ समुद्रपानकर्ता ७४ संसारवृक्ष की जड़ ७५ बड़े विशाल ७६ अमृतरूप ७७ कार्य तथा कारण की आत्मा ७८ महामुनि ७९ परपद के आरोहक ८० परमपद पर चढ़े हुए ८१ सदाचारी ८२ पुण्यकीर्ति ८३ सेना के आभूषण (बल) ८४ दिव्य भूषण ८५ चित्तवृत्तिनिरोधरूप ८६ युगादि जिसके कर में ८७ त्रिविक्रम ८८ युगरूप ८९ बड़े रूपवाले ९० गजासुर के नाशक ९१ मृत्यु ९२ न्याय के प्रवर्तक ९३ पैदल चलनेवाले ९४ परोक्ष के ज्ञाता ९५ निश्चल ज्ञानी

---

८७ तीन भुवन नापनेवाले ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहुमालो[९६] महामालः[९७] शशी[९८]हरसुलोचनः ।
विस्तारो लवणः[९९] कूपस्त्रियुगः[१००] सफलोदयः ॥१२७॥
त्रिलोचनो[२] विषण्णाङ्गो[३] मणिबिद्धो[४] जटाधरः[५] ।
बिन्दु[६]र्विसर्गः[७] सुमुखः[८] शरः[९] सर्वायुधः[१०] सहः[११] ॥१२८॥
निवेदनः[१२] सुखाजातः[१३] सुगन्धारो[१४] महाधनुः[१५] ।
गन्धपाली च भगवा[१६]नुत्थानः सर्व[१७]कर्मणाम् ॥१२९॥
मन्थानो बहुलो[१८] वायुः सकलः[१९] सर्वलोचनः[२०] ।

---

९६ अनन्त लीलाओं के कर्ता ९७ बड़े लम्बे मालाधारी ९८ चन्द्र के समान शीतल नेत्रवान् ९९ बड़े फैले क्षार समुद्ररूप १०० सत्ययुग, त्रेता, द्वापररूप ।

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका अष्टम शतक ।

१ उत्तम फलों के उदयरूप २ त्रिनेत्र ३ भूम्यादिक अष्टरूप ४ कुंडलधारी ५ जटाधारी ६ अनुस्वाररूप ७ विसर्गरूप ८ खुले रूप ९ बाणरूप १० सम्पूर्ण आयुधरूप ११ सबके सहनकर्ता १२ सबकी प्रार्थना के सुननेवाले १३ सुख से आविर्भूत १४ दिव्य गाँधार देश में होनेवाले वा वासी १५ पिनाक धन्वाधारी १६ प्रपंच रचनेवाले भगवान् १७ सब कर्मों के उठानेवाले १८ निरवधि महाप्रलय के वायु १९ पूर्ण २० सबको देखनेवाले

---

१६ गंध=प्रपंच ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तलस्तालः[२१] करस्थाली[२२] ऊर्ध्वसंहननो[२३] महान्[२४]॥१३०॥
छत्रं[२५] सुच्छत्रो[२६] विख्यातो[२७] लोकः सर्वाश्रयः[२८] क्रमः।
मुण्डो[२९] विरूपो[३०] विकृतो[३१] दण्डी[३२] कुण्डी[३३] विकुर्वणः[३४]॥१३१॥
हर्यक्षः[३५] ककुभो[३६] वज्री[३७] शतजिह्वः[३८] सहस्रपात्[३९]।
सहस्रमूर्धा देवेन्द्रः[४०] सर्वदेवमयो[४१] गुरुः[४२]॥१३२॥
सहस्रबाहुः[४३] सर्वाङ्गः[४४] शरण्यः[४५] सर्वलोककृत्[४६]।
पवित्रं[४७] त्रिककुन्मन्त्रः[४८] कनिष्ठः[४९] कृष्णपिङ्गलः[५०]॥१३३॥

---

२१ ताली बजानेवाले २२ हाथ में लेकर भोजन करनेवाले २३ दृढ़ शरीरवाले २४ बड़े ऊँचे २५ छत्ररूप २६ दिव्य छत्र २७ लोक में विख्यात २८ सबके आधारभूत नियम २९ शिर घुटे ३० विकटरूप ३१ साधारण ३२ दंड-धारी ३३ कूँड़ी धारणकर्ता ३४ कर्मों से अप्राप्य ३५ सिंह-रूप ३६ सब दिशाओं के रूप ३७ वज्रधारी ३८ सौ जीभ-वाले ३९ हज़ारों पैर तथा हज़ारों शिरवाले ४० देवताओं के इन्द्र ४१ सब देवताओं के रूप ४२ संसार के गुरु ४३ हज़ारों हाथवाले ४४ सबके अंग ४५ शरणागतवत्सल ४६ सब लोकों के कर्ता ४७ पावन ४८ ऊँचे स्थान के बीज, शक्ति, कीलकरूप तीन मंत्रोंवाले ४९ अदिति के पुत्रों में छोटे वामनरूपी विष्णु ५० हरिहरात्मकदेव

---

३९ सहस्रपात् सहस्र मूर्धा एक ही नाम है। ४८ ककुदी=ऊँचा स्थान। ५० कृष्ण=श्याम, पिंगल, श्वेत।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्रह्मदण्डविनिर्माता[51] शतघ्नीपाशशक्तिमान्[52] ।
पद्मगर्भो[53] महागर्भो[54] ब्रह्मगर्भो[55] जलोद्भवः[56] ॥ १३४ ॥
गभस्तिर्[57]ब्रह्मकृद्[58]ब्रह्मी[59] ब्रह्मविद्[60]ब्राह्मणो[61] गतिः[62] ।
अनन्तरूपो[63] नैकात्मा[64] तिग्मतेजाः[65] स्वयंभुवः १३५
ऊर्ध्वगात्मा[66] पशुपतिर्[67]वातरंहा[68] मनोजवः[69] ।
चन्दनी[70] पद्मनालाग्रः[71] सुरभ्युत्तरणो[72] नरः[73] ॥ १३६ ॥
कर्णिकारमहास्रग्वी[74] नीलमौलिः[75] पिनाकधृत्[76] ।

---

५१ ब्रह्मदंडके रचयिता ५२ शतघ्नी पाश शक्तिधारी ५३ पद्मगर्भ (ब्रह्मा) ५४ पृथ्वी, आकाश के मध्य का अवकाश ५५ वेद से गर्भित ५६ जल से प्रादुर्भूत ५७ किरणधारी ५८ वेद के कर्ता ५९ वेद के अध्ययनकर्ता ६० वेदार्थ के ज्ञाता ६१ वशिष्ठरूप ६२ ब्रह्मिष्ठ पुरुषों की गति ६३ अनन्त रूपवान् ६४ अनेक शरीरधारी ६५ ब्रह्मा के प्रति दुस्सह तेजवाले ६६ उपाधित्रय से परे ६७ जीवों के ईश्वर ६८ वायु के समान वेगवाले ६९ मन के समान वेगवान् ७० चन्दनधारी ७१ पृथ्वी के आधार ७२ कामधेनु को शाप देनेवाले ७३ जिसका अन्त न हो ७४ कर्णिकार पुष्पों की बड़ी माला धारण करनेवाले ७५ नीलमणिमय किरीटधारी ७६ पिनाक धनु धारणकर्ता

---

५६ जल=एकार्णव। ५७ गभस्ति=किरण। ५८ ब्रह्म=वेद।
६६ उपाधित्रय=१ उत्पत्ति, २ स्थिति, ३ विनाश।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उमापति[77]रुमाकान्तो[78] जाह्नवीधृ[79]दुमाधवः[80] ॥ १३७ ॥

वरो वराहो[81] वरदो[82] वरेण्यः[83] सुमहास्वनः[84] ।

महाप्रसादो[85] दमनः[86] शत्रुहा[87] श्वेतपिङ्गलः[88] ॥ १३८ ॥

पीतात्मा[89] परमात्मा[90] च प्रयतात्मा[91] प्रधानधृत्[92] ।

सर्वपार्श्वमुख[93]स्त्र्यक्षो[94] धर्मसाधारणो[95] वरः १३९ ॥

चराचरात्मा[96] सूक्ष्मात्मा[97] अमृतो गोवृषेश्वरः[98] ।

---

७७ विद्या के पति ७८ ब्रह्मविद्या के कान्त ७९ श्रीगंगाजी के धारणकर्ता ८० पार्वती के पति ८१ यज्ञरूपी वराह ८२ नाना-रूप से संसार के पालक ८३ श्रेष्ठ ८४ हयग्रीवावतार ८५ बड़े प्रसन्न ८६ दमनकर्ता ८७ कामादिक शत्रुओं के हन्ता ८८ अर्ध-नारीश्वर ८९ सुवर्णवर्ण ९० परमात्मा ९१ शुद्धचित्त ९२ त्रिगुणात्मक जगत्कारणरूपी अज्ञान के धारणकर्ता ९३ पंचमुख ९४ त्रिनेत्र ९५ पुण्य के अनुरूप वर के दाता ९६ चल अचल की आत्मा ९७ अगोचररूप ९८ अमृतरूप पृथ्वी धर्म के पति

---

७७ उमा=विद्या । ७८ उमा=ब्रह्मविद्या। ८८ श्वेत पिंगल=दाहिना-कर्पूर गौर, वाम-कनक पिंगल । ९० परमात्मा=१ अन्न, २ प्राण, ३ मन ४ विज्ञान, ५ आनन्द । इन पांच से परे छठे स्वयं । ९३ पंच-मुख=चारों दिशा और आकाश यह पांच मुख । ९४ त्रिनेत्र=१ सोम, २ सूर्य, ३ अग्नि । ९६ चल=स्वर्ग, अचल=मार्ग । ९७ अगोचर=दृष्टि से परे ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

साध्यर्षि[९९]र्वसु[१००]रादित्यो विवस्वान्[१]सविताऽमृतः ॥१४०॥
व्यासः[२] सर्गः सु[३]संक्षेपो विस्तारः पर्ययो[४]नरः ।
ऋतु[५]ः संवत्सरो[६] मासः[७] पक्षः[८] संख्यासमापनः[९] ॥१४१॥
कला[१०] काष्ठा[११] लवा मात्रा[१२] मुहूर्ताहः[१३] क्षपाः[१४] क्षणाः[१५] ।
विश्वक्षेत्रं[१६] प्रजाबीजं[१७] लिङ्ग[१८]माद्यस्तु निर्गमः[१९] ॥१४२॥
सद[२०]सद्[२१]व्यक्त[२२]मव्यक्तं[२३] पिता[२४] माता[२५] पितामहः[२६] ।

---

९९ देवतों के जो देवता उनके ऋषि (आचार्य) १०० अदिति के पुत्र वसु नाम के देवता ।

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका नवम शतक ।

१ किरणों द्वारा भुवनों को आच्छादित करनेवाले सूर्य-चन्द्र-रूप २ पुराण-इतिहास के कर्ता ३ सर्ग तथा संक्षेप के विस्तार-कर्ता ४ चतुर्दिक्षु व्याप्त नर जीवरूप ५ ऋतुरूप ६ संवत्सररूप ७ मासरूप ८ पक्षरूप ९ अमावास्या पौर्णमासी संक्रान्तिरूप १० कलारूप ११ काष्ठारूप १२ मात्रारूप १३ मुहूर्तरूप १४ रात्रिरूप १५ ऋतु आदि काल के अवयव १६ संसार के क्षेत्र (पृथ्वी) १७ मायायुक्त चैतन्यरूप १८ महत्तत्त्व १९ अंकुररूप २० अच्छे कार्यरूप २१ कारणरूप २२ खुले हुए २३ छिपे हुए २४ पिता २५ माता २६ पिता के पिता

---

९९ साध्य=देव के देव ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स्वर्गद्वारं[27] प्रजाद्वारं[28] मोक्षद्वारं[29] त्रिविष्टपम्[30] ॥ १४३ ॥
निर्वाणं[31] ह्लादनश्चैव[32] ब्रह्मलोकः[33] परागतिः[34] ।
देवासुरविनिर्माता[35] देवासुरपरायणः[36] ॥ १४४ ॥
देवासुरगुरुर्[37] देवो[38] देवासुरनमस्कृतः[39] ।
देवासुरमहामात्रो[40] देवासुरगणाश्रयः[41] ॥ १४५ ॥
देवासुरगणाध्यक्षो[42] देवासुरगणाग्रणीः[43] ।
देवातिदेवो[44] देवर्षिर्[45] देवासुरवरप्रदः[46] ॥ १४६ ॥
देवासुरेश्वरो[47] विश्वो[48] देवासुरमहेश्वरः[49] ।

---

२७ स्वर्ग के द्वार (तपरूप) २८ प्रजा के द्वार (मोहरूप) २९ मोक्ष के द्वार (वैराग्यरूप) ३० स्वर्गसाधनरूप (धर्म) ३१ मोक्षरूप ३२ आनंदित करनेवाले ३३ सत्यलोक ३४ तप से भी ऊपर जानेवाले ३५ देव तथा असुरों को बनानेवाले ३६ देवता तथा असुरों के परायण ३७ देवता तथा असुरों के गुरु बृहस्पति-शुक्र ३८ विजयाभिलाषी ३९ देव तथा असुरों से नमस्कृत ४० देव तथा असुरों से श्रेष्ठ ४१ देव तथा असुरगणों के आश्रय ४२ देव तथा असुरगणों के अध्यक्ष (इन्द्र विरोचनादि रूप) ४३ देव तथा असुरगणों के अग्रणी (स्वामिकार्त्तिक केशी दैत्यरूप) ४४ इंद्रियों से परे स्वयं प्रकाशमान ४५ नारदादिरूप ४६ देव तथा असुरों के वरदाता (ब्रह्म रुद्र रूप) ४७ देवेशों तथा असुरेशों के अन्तर्यामी ४८ संसार के प्रवेश स्थान ४९ देव तथा असुरों के महेश्वर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सर्वदेवमयो[50]ऽचिन्त्यो[51] देवतात्मा[52]त्मसम्भवः[53] ॥१४७॥
उद्भित्[54]त्रिविक्रमो[55] वैद्यो[56] विरजो[57] नीरजो[58]ऽमरः[59] ।
ईड्यो[60] हस्तीश्वरो[61] व्याघ्रो[62] देवसिंहो[63] नरर्षभः[64] ॥१४८॥
विबुधो[65]ऽग्रवरः[66] सूक्ष्मो[67] सर्वदेव[68]स्तपोमयः[69] ।
सुयुक्तः[70] शोभनो[71] वज्री[72] प्रासानां प्रभवो[73]ऽव्ययः[74] ॥१४९॥
गुहः[75] कान्तो[76] निजःसर्गः[77] पवित्रं[78] सर्वपावनः[79] ।
शृङ्गी[80] शृङ्गप्रियो[81] बभ्रू[82] राजराजो[83] निरामयः[84] ॥१५०॥

---

५० सर्वदेवमय ५१ अचिंत्य ५२ देवताओं की अन्तरात्मा ५३ स्वतःसिद्ध ५४ स्थावररूप वा यज्ञादिरूप ५५ तीन भुवनों को नाँघनेवाले (वामन) ५६ विद्यावान् ५७ निर्मल ५८ रजोगुणरहित ५९ विनाशरहित ६० स्तुति के योग्य ६१ कालहस्तीश्वर नामक वायव्य लिंगरूप ६२ व्याघ्रेश्वर नाम के लिंगरूप ६३ देवताओं में बली ६४ मनुष्यों में श्रेष्ठ ६५ बड़े पंडित ६६ यज्ञ में प्रथम भाग लेनेवाले ६७ कठिनता से देख पड़नेवाले ६८ सर्वदेवरूप ६९ तमरूप ७० सदा सन्नद्ध ७१ कल्याणरूप ७२ वज्र आयुधधारी ७३ प्रास आदि आयुधों के उत्पादक ७४ एकाग्रचित्त से प्राप्य ७५ कुमारावस्था ७६ सुख की अन्तिम अवस्था ७७ स्वयं बनानेवाले ७८ वज्र से रक्षा करनेवाले ७९ सब पवित्र करनेवाले ८० वृषभादिरूप ८१ पर्वत शिखर के प्रेमी ८२ शनिरूप ८३ कुबेररूप ८४ निर्दोष

---

७६ क=सुख । ७७ सृजत इति सर्गः । ७८ पवि=वज्र, त्र=रक्षा ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अभिरामः[85] सुरगणो[86] विरामः[87] सर्वसाधनः[88] ।
ललाटाक्षो[89] विश्वदेवो[90] हरिणो[91] ब्रह्मवर्चसः[92] १५१॥
स्थावराणां[93] पतिश्चैव नियमेन्द्रियवर्धनः[94] ।
सिद्धार्थः[95] सिद्धभूतार्थो[96]ऽचिन्त्यः[97] सत्यव्रतः[98] शुचिः[99] १५२
व्रताधिपः[110] परं[1] ब्रह्म[2] भक्तानां परमा[3] गतिः ।
विमुक्तो[4] मुक्ततेजाश्च[5] श्रीमान्[6] श्रीवर्धनो[7] जगत्[8] १५३

---

८५ प्रीति के उत्पादक ८६ देवसमूहरूप ८७ सबके विश्राम-स्थान ८८ सब कर्मों के साधनरूप ८९ मस्तक में नेत्र धारण-कर्ता ९० ब्रह्माण्ड को कन्दुक की भाँति खेलनेवाले ९१मृगरूप ९२ विद्या-तप से उत्पन्न तेजरूप ९३ हिमाचलादिरूप व उनके पति९४ नियमपूर्वक इन्द्रियों को बढ़ानेवाले ९५ तत्त्वज्ञान के अर्थी ९६ समाधिसिद्ध अर्थ है जिनका ९७ ध्यान में न आने योग्य ९८ सत्यव्रती ९९ निर्मल चित्त१००व्रतों के स्वामी फलदाता ।

श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र भाषाटीका दशम शतक ।

१ शिवरूप २ देशकालादिसम्बन्धरहित ३ भक्तजनों की परमगति ४ विमुक्त ५ तेज फैलानेवाले ६ ऐश्वर्यवान् ७ लक्ष्मी के बढ़ानेवाले ८ संसाररूप

इति श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र अष्टाधिक सहस्रनाम समाप्त ।

श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु ।

---

८७ विराम=ठहरना । ७ श्री=लक्ष्मी ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यथाप्रधानं भगवानिति भक्त्या स्तुतो मया।
यन्न ब्रह्मादयो देवा विदुस्तत्त्वेन नर्षयः ॥ १५४ ॥
स्तोतव्यमर्च्यं वन्द्यं च कः स्तोष्यति जगत्पतिम्।
भक्त्या त्वेवं पुरस्कृत्य मया यज्ञपतिर्विभुः ॥१५५॥
ततोऽभ्यनुज्ञां संप्राप्य स्तुतो मतिमतां वरः।
शिवमेभिः स्तुवन्देवं नामभिः पुष्टिवर्धनैः ॥१५६॥
नित्ययुक्तः शुचिर्भक्तः प्राप्नोत्यात्मानमात्मना १५७
एतद्धि परमं ब्रह्म परं ब्रह्माधिगच्छति।
ऋषयश्चैव देवाश्च स्तुवन्त्येतेन तत्परम् ॥१५८॥

अनंत नामों में से प्रधान सहस्र नामों द्वारा मैंने भक्तिपूर्वक भगवान् की स्तुति की, जिन्हें ब्रह्मादिक देव तथा ऋषिगण भी यथार्थ नहीं जानते ॥ १५४॥ स्तुति से, पूजन से, वंदना से जगत् के पति को कौन संतुष्ट कर सकता है। सर्वव्यापक यज्ञपति स्वामी के आगे मैंने भक्तिपूर्वक जो कुछ अर्पण किया, वह सब उन्हीं की कृपा का फल है॥१५५॥ उन्हीं श्रीमहाराज की आज्ञा पाकर मैंने स्तुति की। इन पुष्टि बढ़ानेवाले नामों के द्वारा श्रीशिवजी की स्तुति करने से ॥ १५६ ॥ नित्यभक्तियुक्त पवित्र भक्त सामीप्य मुक्ति का भागी होता है॥१५७॥ इस उत्कृष्ट ब्रह्मप्राप्ति-साधनभूत विद्या का जप करने से पुरुष कैवल्यपद को प्राप्त होता है, इसी से ऋषि तथा देवतागण संलग्न मन हो इसी स्तोत्र से परमेश्वर की स्तुति करते हैं॥१५८॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स्तूयमानो महादेवस्तुष्यते नियतात्मभिः ।
भक्तानुकम्पी भगवानात्मसंस्थाकरो विभुः॥ १५६॥
तथैव च मनुष्येषु ये मनुष्याः प्रधानतः ।
आस्तिकाः श्रद्दधानाश्च बहुभिर्जन्मभिः स्तवैः १६०
भक्त्या ह्यनन्यमीशानं परं देवं सनातनम् ।
कर्मणा मनसा वाचा भावनामिततेजसः ॥१६१॥
शयाना जाग्रमाणाश्च व्रजन्नुपविशंस्तथा ।
उन्मिषन्निमिषंश्चैव चिन्तयन्तः पुनः पुनः॥ १६२॥
शृण्वन्तः श्रावयन्तश्च कथयन्तश्च त भवम् ।
स्तुवन्तः स्तूयमानाश्च तुष्यन्ति च रमन्ति च १६३

इसके द्वारा नियमपूर्वक स्तुति करने से सर्वव्यापक श्रीमहादेवजी संतुष्ट होते हैं और भक्तों पर कृपा करनेवाले वे भगवान् मोक्ष के दाता होते हैं ॥ १५६ ॥ उसी प्रकार मनुष्यों में प्रधानतया जो मनुष्य आस्तिक तथा श्रद्धालु हैं और बहुत जन्मों से इस स्तुति के द्वारा श्रीशिवजी की स्तुति करते चले आये हैं ॥१६०॥ अमित तेजस्वी पुरातन परमदेव ईशान महाराज की कर्म से, मन से, वचन से, अनन्य भक्ति से ॥ १६१ ॥ सोते-जागते, चलते-बैठते निरंतर चिंतन करते हुए ॥ १६२ ॥ श्रीभगवान् की कथा सुनते-सुनाते, कहते-कहाते तथा स्तुति करते कराते प्रसन्न होते उन्हीं में लगे हुए ॥ १६३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जन्मकोटिसहस्रेषु नानासंसारयोनिषु ।
जन्तोर्विगतपापस्य भवे भक्तिः प्रजायते॥ १६४ ॥
उत्पन्ना च भवे भक्तिरनन्या सर्वभावतः ।
भाविनः कारणे चास्य सर्वयुक्तस्य सर्वथा ॥१६५॥
एतद्देवेषु दुष्प्रापं मनुष्येषु न लभ्यते ।
निर्विघ्ना निश्चला रुद्रे भक्तिरव्यभिचारिणी १६६
तस्यैव च प्रसादेन भक्तिरुत्पद्यते नृणाम् ।
ये न यान्ति परां सिद्धिं तद्भागवतचेतसः ॥१६७॥
ये सर्वभावानुगताः प्रपद्यन्ते महेश्वरम् ।
प्रपन्नवत्सलो देवः संसारात्तान्समुद्धरेत् ॥ १६८ ॥

असंख्य जन्म द्वारा संसारी नानाप्रकार की योनियों में भ्रमण करते हुए जीव सम्पूर्ण पापों से छूट जाते हैं और श्रीभवदेव में भक्ति होती है ॥ १६४ ॥ हर तरह से उस भाग्यवान् सर्व-साधक पुरुष की संसार के कारण श्रीभवदेव में भेदरहित भक्ति उत्पन्न होती है ॥ १६५॥ यह स्तुति देवताओं को भी कठिनता से मिलती है, मनुष्यों को तो, दुर्लभ ही है । इससे रुद्रभगवान् में निर्विघ्न शुद्ध निश्चल भक्ति ॥ १६६ ॥ उन्हीं देव के प्रसाद से मनुष्यों में उत्पन्न होती है । उस परमेश्वर में संलग्न चित्तवाले योगी जो सारूप्य सिद्धि में नहीं जाते ॥ १६७ ॥ वे सर्वतोभावेन महेश्वर को प्राप्त होते हैं। तब वह शरणागत की रक्षा करनेवाला देव उन्हें संसार से तार देता है ॥ १६८ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एवमन्ये विकुर्वन्ति देवाः संसारमोचनम् ।
मनुष्याणामृते देवं नान्या शक्तिस्तपोबलम् १६९॥
इति तेनेन्द्रकल्पेन भगवान्सदसत्पतिः ।
कृत्तिवासाः स्तुतः कृष्ण तण्डिना शुभबुद्धिना १७०
स्तवमेतं भगवतो ब्रह्मा स्वयमधारयत् ।
गीयते च स बुद्ध्येत ब्रह्मा शंकरसन्निधौ ॥१७१॥
इदं पुण्यं पवित्रं च सर्वदा पापनाशनम् ।
योगदं मोक्षदं चैव स्वर्गदं तोषदं तथा ॥ १७२ ॥
एवमेतत्पठन्ते य एकभक्त्या तु शंकरम् ।
या गतिः सांख्ययोगानां व्रजन्त्येतां गतिं तदा१७३

संसार-बंधनमोचक श्रीमहाराज शंकरजी से पृथक् दूसरे देव मनुष्यों की तपरूपी शक्ति को इधर-उधर भटका कर नष्ट करा देते हैं ॥१६९॥ हे कृष्ण ! इस कारण शुभ बुद्धि श्रीतंडी ऋषि ने इन्द्रकल्प में भगवान् सदसत्पति श्रीशंकरजी की स्तुति की ॥ १७० ॥ भगवान् की इस स्तुति को ब्रह्माजी स्वयं धारण करते हैं और श्रीशंकरजी के समीप इसका गान करते हुए जानते हैं ॥ १७१ ॥ कि यह पुण्यरूप है और पवित्र है, सदा पापनाशक है, योग, मोक्ष, स्वर्ग तथा संतोष का दाता है ॥ १७२ ॥ जो इसे शंकरजी के समीप अनन्य भक्ति से पढ़ते हैं, वे सांख्य योगधारी पुरुषों की गति को जाते हैं ॥१७३॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स्तवमेतं प्रयत्नेन सदा रुद्रस्य सन्निधौ ।
अब्दमेकं चरेद्भक्तः प्राप्नुयादीप्सितं फलम् ॥१७४॥
एतद्रहस्यं परमं ब्रह्मणो हृदि संस्थितम् ।
ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक्रः प्रोवाच मृत्यवे॥१७५॥
मृत्युः प्रोवाच रुद्रेभ्यो रुद्रेभ्यस्तारिडमागमत् ।
महता तपसा प्राप्तस्तारिडना ब्रह्मसद्मनि ॥१७६॥
तारिडः प्रोवाच शुक्राय गौतमाय च भार्गवः ।
वैवस्वताय मनवे गौतमः प्राह माधव ॥ १७७ ॥
नारायणाय साध्याय समाधिष्ठाय धीमते ।
यमाय प्राह भगवान् साध्यो नारायणोऽच्युतः १७८

इस स्तव को जो भक्त सदा यत्नपूर्वक शिवजी के समीप एक वर्ष तक निरन्तर पढ़ते हैं वे मनवाञ्छित फल पाते हैं ॥ १७४ ॥ अपने हृदय में स्थित इस दिव्य रहस्य को ब्रह्माजी ने इन्द्र को बतलाया, इन्द्र ने मृत्यु से कहा ॥१७५॥ मृत्यु ने रुद्र से कहा, रुद्र से तंडी ऋषि ने पाया। बड़ी तपस्या के बल से तंडी ऋषि ने ब्रह्मलोक में पाया ॥ १७६ ॥ तंडी ने शुक्र को बतलाया, शुक्र ने गौतम से कहा। हे माधव ! गौतम ने वैवस्वत मनु को बतलाया ॥ १७७ ॥ और साध्य अच्युत भगवान् ने समाधि में स्थित नारायण-स्वरूप संयमी मतिमान् वैवस्वत यम से कहा ॥ १७८ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नाचिकेताय भगवानाह वैवस्वतो यमः।
मार्कण्डेयाय वार्ष्णेय नाचिकेतोऽभ्यभाषत १७९॥
मार्कण्डेयान्मया प्राप्तो नियमेन जनार्दन।
तवाप्यहममित्रघ्न स्तवं दद्यां ह्यविश्रुतम् ॥ १८०॥
स्वर्ग्यमारोग्यमायुष्यं धन्यं वेदेन सम्मितम्।
नास्य विघ्नं विकुर्वन्ति दानवा यक्षराक्षसाः १८१॥
पिशाचा यातुधाना वा गुह्यका भुजगा अपि।
यः पठेत शुचिः पार्थ ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः।

ऐश्वर्यशाली वैवस्वत यम ने नाचिकेत से कहा, हे वार्ष्णेय! नाचिकेत ने मार्कंडेय से कहा॥१७९॥हे जनार्दन! इस नियम से मार्कंडेयजी से मैंने पाया। हे शत्रुओं के नाशकर्ता कृष्ण! इस दिव्य स्तुति को मैंने आपसे कहा॥१८०॥ यह स्तव स्वर्ग, आरोग्य तथा आयु को देनेवाला है। धन्य है, वेद सम्मत है। इसके धारण करनेवाले को दानव, यक्ष, राक्षस का भय नहीं होता॥१८१॥ और पिशाच, राक्षस तथा गुह्यक और सर्प इत्यादि समीप नहीं आते। हे पार्थ! जो जितेंद्रिय ब्रह्मचारी पवित्र होकर निरंतर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अभग्नयोगो वर्षन्तु सोऽश्वमेधफलं लभेत् १८२॥
इतिश्रीमहाभारते अनुशासनपर्वणि आनुशासनिक-
प्रकरणे दानधर्मे श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्रं
समाप्तम् ॥
श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।

एक वर्ष तक शिवजी के समीप पढ़ते हैं, उन्हें अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है ॥१८२॥

इति श्रीमहाभारत अनुशासनपर्व आनुशासनिक प्रकरण
दानधर्माख्यान में श्रीमहादेवसहस्रनामस्तोत्र
समाप्त ।

श्रीशिवार्पणमस्तु ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor